पौष शुक्ला १२ (चौथी)—वस्त्र श्याम खीन खाप के बागा। चाकदार सूथन ठाडे वस्त्र लाल आभरण मोती के। पगा हीरा को। चन्द्रिका सादा। पिछवाई खण्ड श्याम खीन खाप की लाल हासिया वारी माडा की। सामग्री विविध प्रकार। सामग्री में मंगला भोग की चौकी। पद नित्य के।

पौष शुक्ला १३—पदाधार पै शृंगार ऐच्छिक। वस्त्र लाल साटन के सादा। पटका लाल पाग लाल ठाडे वस्त्र पीरे आभरण पन्ना मोती के छोटो कर्ण फूल को शृंगार। पद तानसेन को—

कित ह्वै जेहो सबेरे कहौ तुभ कहा ते आये।
हम तुमको पहचानत नाही मेरे घर आवत भोरे।
लाल पाग पीताम्बर सोहे ये ही विधि आवत तेरे।
तानसेन के प्रभु नटवर नागर सब सखियन मिलि घेरे।
आज सखी अति वने गिरधरन।
....
गोविन्द प्रभु चित चोर्यो त्रैलोक जुवती मनहरन।

पौष शुक्ला १४—शृंगार ऐच्छिक आज घटा अधरंग की। वस्त्र बागा भेरदार पाग। सूथन। ठाडे वस्त्र। पिछवाई खण्ड। गादी तकिया चौकी ये सब अधरंग साटन के आभरण माणक मोती के छोटो शृंगार कतरा श्रीमस्तक पै अधरंग कर्ण फूल को शृंगार।

पौष शुक्ला १५—ऐच्छिक शृंगार। बारह महिनान की पूर्णिमान में आज की ही पूर्णिमा ऐसी है जापै ऐच्छिक शृंगार करि सकें। चार पांच बरस सूं ये ही शृंगार प्रायः होय है।

वस्त्र भरत के गुलाबी साटन के गहरे। बागा चाकदार। श्रीमस्तक पै कुलहे पै खोंप। उपरना भारी कुण्डल को शृंगार। पिछवाई भरत की। खण्ड भी वैसो ही। ठाडे वस्त्र शोभते भये। आज मेघश्याम धरें। आभरण सब जड़ाऊ। कुलहे जड़ाऊ आदि।

गोवर्धनधारी श्रीजी की पौष सुख सेवा मांझ,
विविध मनोरथन सों रस बरसावैं हैं।
दाऊजी को जनम द्यौस कल्याणराय विट्ठलेश जी को
गोविन्द गोपेश्वर औ. दामोदर भावै हैं॥
पीताम्बर चोलना छटान की छटा नव नव
फतुई दुहेरा वस्त्र गद्दल के सुहावै हैं
मंगल भोग द्वादसी पौष को जु मास यह
पंचम तरंग पूरण करि गोविन्द चरण लावैं हैं।

या प्रकार पौष मास की सेवा उत्सव भावना सम्पूर्ण भई।

श्रीनाथजी

श्रीनाथ—सेवा—रसोदधि

षष्ठ तरंग

माघ-फाल्गुन-चैत्र मास

[नित्य सेवा, उत्सव एवं महोत्सव]

(स्वामिनी—श्री चन्द्रावलीजी)

गोपीन को वर्गीकृत स्वरूप

१. **नित्य सिद्धा**—ये प्रभु के नित्य धाम में अभिन्न रूप में सेवारत रहिवे वारी हैं। इनन्ने अत्यन्त कठिन तपस्या कीनी। इनकी अनन्यता तत्परता सेवा-लालसा सों वशीभूत है के भगवान् ने दर्शन दें कृतार्थ कीनी। इन नित्य सिद्धान से माखन चोरी में पूजा ग्रहण करि वस्त्र हरण प्रसंग में इनको संसार रूपी व्यवधान दूर कियो। रासलीला में सुख दान दें त्रिगुणात्मक रसदान दै कृतार्थ कीनी।

२. **श्रुति रूपा**—ये परमात्मा पर ब्रह्म को वर्णन करिवे वारी नित्य विहार द्वारा "रसोवैसः" प्राप्त करिवे वारी—उद्गीता, सुगीता, कल्पगीता, कलकंठिका विपंची आदि भईं।

३. **ऋषि रूपा**—रामावतार में भगवान् पै मोहित होयवे वारे ऋषियन के पत्नि भाव कों पूर्ण करिके उन ऋषिरूपान कों महारास में अंगीकृत किये।

४. **नन्वकुमारिकाएँ**—मिथिला गोपी, कौशल गोपी, अयोध्या गोपी, पुलिन्द गोपी (वनचरी) रमावैकुंठ गोपी, श्वेत द्वीपवती गोपी, जालंधरी गोपी—ये सब ब्रज में अवतरित भईं। नन्द कुमारिकाएँ कहाईं। महारास की दिव्य लीला में समावेष्टित भईं।

श्री चंद्रावलीजी को परिचय :—

श्री चन्द्रावली जी पुष्टिमार्ग में दोनों स्थानन में प्रत्यक्ष दर्शन दै सेवकन कूँ कृतार्थ करे हैं। एक श्रीमद् गोकुल में श्री गोकुलनाथ जी के साथ, दूसरे श्री काम्यवन में मदन मोहन जी के साथ। इनको प्राकट्योत्सव स्वामिनीवत् माने हैं। भाद्रपद शुक्ला ५ मीरीठोरा गाँव में चन्द्रभान गोप के घर माता सुखमा की कोख सूँ मध्याह्न में आप को जन्म भयो। आपको श्रीविग्रह सदा १४ वर्ष चार मास बीस दिनन को मान्यो जाय।

चन्द्रभान के नव निधि आईं।
सुखमा कूख अवतरी कन्या घर घर बजत वधाई।
नाम धर्यो चन्द्रावलि सुखनिधि कोटिक चन्द्र लजाने।
भादों सुद पाँचें शुभ वासर अरुन हृदय रस माने।
सुनि वृषभान नन्द मन हरखें देखि अनुपम सोभा।
कृष्णदास गिरधरजी की जोरी देखत रति पति लोभा।

श्री के दक्षिण भाग में श्री स्वामिनी जी बिराजें। इन को स्वरूप शृंगार रस को उद्दीपन विभाव रूप है गौर स्वरूप शृंगार को उद्बोधक है। याही से श्रीजी में दांत के खिलौना आवें। वे वाम भाग में रहें। अन्य खिलौना दक्षिण भाग में। श्याम और गौर उभय प्रीतिवन्त हैं। तासे सदा संग विराजें; संग पौढ़ें संग संग पलना हिंडोलादि झूलें। मदन मोहन जी एवं गोकुलनाथ जी दोऊन के यहाँ। श्रीमद् गोकुल में गोकुलनाथ जी के यहां चन्द्रावली जी विराजें उनको यमुनाजी से प्राकट्य माने हैं। ये दोनों स्वामिनी जी गौर हैं स्वामिनी जी बड़ी हैं चन्द्रावली जी छोटी हैं। इन चन्द्रावलीजी के श्रीहस्त में वीणा है। वह वीणा बजाते भये श्रीहस्त हैं याही सों श्री वल्लभ (गोकुलनाथजी) गुसाईं जी के चतुर्थ लालजी ने अपने पदन में वर्णन कियो है वह या प्रकार है :— (राग सारंग)

बैठे हरि राधा संग कुञ्ज भवन अपने रंग कर,
मुरली अधर धरे सारंग मुख गाई।
मोहन अति ही सुजान परम चतुर गुणनिधान
जान बूझ एक तान चूक के बजाई।
प्यारी जब गह्यो बीन सकल कला गुण प्रवीन
अति नवीन रूप वही तान सुनाई।
वल्लभ गिरिधरन लाल रीझि दई अंकमाल
कहते भले जु भले सुन्दर वर राई।

यहाँ वल्लभ शब्द श्री गोकुलनाथ जी को वाचक तथा पद चन्द्रावली जी कूँ लक्ष्य करि प्रकट कियो। मदन मोहनजी में जो स्वरूप बिराजै वह पीत स्वरूप तथा स्वामिनीजी छोटे हैं। एक श्री हस्त में चँवर तथा दूसरो श्रीहस्त वरद हस्त है या प्रकार बिराजें। गुसाईं श्री विट्ठल नाथ जी चन्द्रसरोवर पे जब छः मास बिराजें तथा नव विज्ञप्तियां लिखि लिखि के पठाईं उन विज्ञप्ति में चन्द्रावली भाव सों विरह प्रकट कियो। टीकाकारन की वाणी से तथ्य प्रकट होय है।

माघ फागुण एवं चैत्र मास ही चन्द्रावली जी की सेवा के क्यों मानें ? याको कारण है कि ये स्वामिनी समान हैं अतः सम्पूर्ण सेवा स्वामिनी जैसी होय है। स्वामिनी जी के तीन मास सावन भाद्रपद आश्विन। श्रावण में अन्तरंग झूला झूलि के रस दान देनो भाद्रपद में उन्मत्त भाव सों नन्दालय को प्राकट्योत्सव में आपको हू प्राकट्योत्सव तथा आश्विन में वेणुनाद महारास में, दान लीला की झकझोर रस लीला में तैसे ही चन्द्रावली जी में भी चैत्र मास में अन्तरंग कुंज, निकुंज, निभृत निकुंज निबिड़ निकुंजादि लीला श्रावण मासवत् अन्तरंग रसदान; भाद्रपद की भाँति होरी फागण में नृत्य गान धूमधाम, तथा माघ मास में मान प्रणयलीला वत् आश्विन की समाप्ति में महारासवत् चैत्र मास की समाप्ति में महारास समाप्तिवत् शृंगार एवं लीला पद होंय।

इन दोनों के समानाधिकार में ४०।४० दिन झाँझें बजनी तथा परिसमाप्ति में महाभोग। यहां परि समाप्ति में डोल भोग सब चतुर्थ यूथिकान के भाव सों होय।

इनकी सेवा के तीन तीन मास में इनके यहाँ विराज कर सब ब्रज भक्तन की सेवा स्वीकार करें परन्तु अधिकार तत् तत् यूथाधिपान कों रहे है यासों ये तीन मास चन्द्रावली जी की सेवा क्रम के उत्सव मनोरथ तथा महामहोत्सवन को वर्णन है। माघ वदी एकम से चैत्र शुक्ला १५ तक आपको सेवाक्रम चले। माघ मास में शीतकाल की सेवा के बीस दिन रहे है यामें ब्रजभक्तन के सेवा क्रम भी निहित है। शृंगार अमुक तिथी को ही निश्चित है; बाकी ऐच्छिक शृंगार होय। शृंगार इन २० दिन को जो होय सो जरुर होय जैसे घटा तीन या चार सुनहरी जरी की। "सोने के भवन में फूली फूली फिरत" या पद के भाव सों सुनहरी जरी की घटा, चँत्री गुलाब खिलने आरम्भ होय ता भाव सों हलकी फूल गुलाबी घटा होय। यदि फतवी जो चारन में रह गई होय तो वाय धरें ठंड जादा पड़े तो गद्दल निकसमा भी धरें तथा पीरी घटा एवं पिरोजी घटादि चार घटाएँ माघ में होंय।

"पीतम प्रीति ही सों पेंयै" या भाव सों यदि पौष में मण्डान सांठा को न भयो होय तो माघ में मण्डान सांठा के रस को भी होय। सैन में ये पद गवे। मण्डान भोग में सांठा रस अरोगें "रसिकनी रस में रहत गडी।" जब पीरी घटा हो तब में घटा पटका छोड़ को आवे।

माघ वदी एकम—की सेवा में श्री चन्द्रावली जी प्रधान है वस्त्र साटन के हरे। **माघ बदी दूज**—श्री चन्द्रलता जी वस्त्र गुलाबी पंचरंग पाग। **माघ बदी तीज**—श्री चन्द्रिकाजी घटा हलकी गुलाबी। **माघ बदी चौथ**—श्री माधवी जी वस्त्र शृंगार ऐच्छिक आज टिपारा धर्यो। **माघ बदी पांचे**—श्री मालती जी वसन्त शृंगार। माघ वदी पाँचे को पूर्व में पीली घटा होती थी यह शृंगार सेवा श्री जी की ओर से है।

वसन्तागम को शृंगार

श्री गोस्वामी तिलक गोवर्धन लाल जी के पुत्र श्री गो० दामोदर लाल जी महाराज ने वि. सं. १९७०-१९७१ के बीच यह वसंत पञ्चमी की अनूठी सूझ-बूझ को शृंगार कियो। यामें घेरदार वागा, पाग, सूथन, सफेद ठाडे वस्त्र लाल मोर चन्द्रिका तथा खण्ड पाट स्वेत चोबा चंदन गुलाल अबीर के खेल सफेद साटन में। आम्र मौर चैती गुलाब के कर्णफूल छड़ी आदि वसंत ही मानो आय गयो। ये शृंगार अद्यावधी होय। उज्जैन में कल्याण भट्ट जी ने एक समै बिना वसंत ही प्रभु गोवर्धन धरण कूँ ये शृंगार अपने यहाँ वसंत मानि के धरायो। यहाँ ब्रज में जतीपुरा में जब उत्थापन में श्री गुसाईं जी ने पट खोले तो श्रीनाथ जी रंग सों रंगे भये दीखे तब गुसाईं जी ने श्रीनाथ जी सो प्रार्थना करी लालन ये कृपा कौन पै भई तब हँसि के श्री मुख से कही तेरो सेवक कल्याण भट्ट ने मोकूँ वसंतखिलायो। गुसाईं जी श्री विटठलनाथ जी ने ता दिन सों सेवक और भक्तन को व्रतोत्सव की टीप निकारिवे की आज्ञा दीनी कारण वैष्णवन के घर प्रभु पधारें भक्त कामना पूरक बनै तो मनोरथी अपनो मनोरथ तो करें पर प्रभु को श्रम न होय तासों जो दिन उत्सव के निश्चित हैं। वामें ही समस्त घरन के सेवक मनोरथ व्रतोत्सव टीप देखिकै करें। आभरण तथा अन्य सब सेवा साधन वसंतवत् करें परन्तु वसंत के गहना तथा वस्तु नहीं धरावें। पुष्टिमार्ग की रीती अनुसार सेवाक्रम प्रणालिका कूं रक्षक वत् मानिके करें। आप श्री ने पदन को चयन भी सुदंर ढंग से कियो वह या प्रकार है—

मंगला में (रागललित) 'अली री तेरे आनन दृगआलसयुत राजत रसमसेरी' शृंगार में (राग विलावल)—आज और कल और दिन प्रति छवि ओर ओर देखियत रसिक गिरराज धरन। राजभोग में—बोलत श्याम मनोहर बैठे। भोग में—बेन माइ वाजत री बंशीवट। सदा वसन्त रहत वृन्दावन पुलिन पवित्र

सुभग जमुना तट ।। आरती में—यह छवि मोपे जात न वरणी । शयन में—कर शृंगार सायंकाल चली ब्रजबला पिय दरशन को मत्तद्विरद गेन ।

घटा

पहले घटा शीतकाल में चार ही होती हरी लाल श्याम पीरी । श्री गोवर्धन लाल जी दामोदरलाल जी बनारस गये मुड़वा मंगल उत्सव कियो मुकंद राय जी की घटा देखि द्वादश घटा द्वादश निकुंजन नायक के भाव सों सं. १८७७ से चालू करी । वे चार यूथाधियान के भाव की ४ पहले की आठ बाद में कीनी । स्वामिनी जी—सुनहरी जरी केशरी चन्द्रोदय वारी २—विशाखा ३—केलिनी
चन्द्रावली जी—रूपहरी जरी पीली लाल २—मैना ३—कुरंगाक्षी
ललिता जी—पतंगी पिरोजी गुलाबी २—विरजा ३—बहुला
यमुना जी—श्याम बैंगनी हरी २—श्यामा कृष्णा वेसनी

इन घटान में कुछ घटा निश्चित दिन कुछ सेवावकाशसों होय हैं । मृगसर में पाँच, पौष में चार, माघ में तीन होंय हैं ।

उत्थापन में—आज बनी दम्पति वर जोरी ।

.....

मान में वसंत शृंगार—राधा रितु दमन कला ।

.....

माघ कृष्णा ६—शृंगार ऐच्छिक । सेवाक्रम श्री केलिनीजी । माघ कृष्णा ७—गुलाबी फूल की घटा । श्री मनोहराजी । यदि इन दिनन में मकर संक्रान्ति आवे तो बड़ो उत्सव मानिके श्री चन्द्रावलीजी प्रधान सेविका होय सेवा करें ।

माघकृष्ण ८ श्री मेवाड़ पधरावे वारे दामोदरजी (गोस्वामितिलक श्री दाऊजी महाराज को उत्सव)—

देहली वन्दनमाल हाँडी । भारी शृंगार हीरा की कुल्हे बड़े बूटा की लाल खीन खापके चाकदार सूयन ठाडे वस्त्र मेघश्याम । गुड एवं आदा प्रकार सखड़ी में बूँदी प्रकार । श्री चन्द्रावलीजी के साथ गुण गूढ़ा जी पिछवाई सिलमा सितारा के । भरत के काम की । बड़ी झाड़ वाला में । लाल धरती पै वनमाला को शृंगार कुण्डल जडाऊ तथा हास त्रवल धुकधुकी आदि । कुल्हे जोड चमक को (घेरा) ।

जितने तिलकायत भये उनके उत्सव पै पद चयन ऐसो कियो जाय जामें उनकी लीला, सेवा एवं भाव निहित रहें । प्रत्येक पद नूतनता विशेषता लिये भये होय । जैसे आज को पद मंगला में श्री तानसेन को—(राग ललित)

आये अलसाने जो पे तुम सरसाने अनत जगेहो रंगे रंग राम के ।
ये तो जानी मेरे आये भोर काहू ओर के रस के चखैया भ्रमर काहू बाग के ।
जहीं ते जु आये लाल तहीं क्यों न जाऊ बाके भाग जागे परम सुहाग के ।
तानसेन के प्रभु बातें न बनाओ बाहू पै जु सँभारो पेच पाग के ।

कुल्हे के भाव के शृंगार होते में, सन्मुख शृंगार में—मणिमय आँगन कीडत रंग । राजभोग में—जयजय श्री वल्लभ राजकुमार । भोग—आजु बने ब्रज राजकुमार । उत्थापन—राखी हो अलक बिच । शयन—तू मोहि कित लाई री । कनक कुसुम ।

मंगला के पद कों या भाव के लिये राख्यो कि प्रभु आप मेवाड़ पधारे । श्रम सों श्रमित होय अलसाय गये । परन्तु भक्त कामना कल्पतरु होवे सो । सरसाने हो अनत जगे रंग राग के साथ (गंगावाई के साथ) पधारे । रंग राग सो जागे ।

मैंने तो जानी मेरे पर कृपा करी परन्तु आप तो अनेक पुष्पन के । शयन मे दूसरो पद को भाव भी ऐसो ही है । तू मोहि कित लाई री यह गली ।

कित बीहड़ जंगल में मेद पाट में लाई । या प्रकार सखी भाव भावित आचार्य गंगावाई आदि वैष्णवन सों प्रार्थना करें हैं । डरपि रही हती परन्तु पुष्टि मार्ग स्तंभ रूप श्री हरिरायजी जैसेन सों भेंट कराई और प्रभु गोवर्धनधर सों मिलाप करायो ।

गोस्वामि तिलकायत श्री दामोदरजी (दाऊजी) महाराज का संक्षिप्त परिचय—

आप श्री लाल गिरधर जी के पुत्र वि० सं० १७११ आज के दिन श्री गोकुल में प्रकट भये । आप श्री को श्री अंग गोल मटोल गोल मुख पर गलगुच्छा बड़े बड़े नेत्र सुन्दर रूपवान हते । सदा आदा एवं गुड के टूँक बटुआ में रखकर अरोगते । याही सों आपकी भावना सों श्रीजी में आदा गुड की सामग्री आज के दिन माघकृष्णा कों अरोगें ।

जतीपुरा गोपालपुरा में लाल गिरधरजी आपके पिता ने गोकुल में आपको उपनयन करिके पधारते समय एक ब्रजवासी गोरवा ने छुरा मार आपकों घायल किये । दानघाटी में छुरा घोंपे पर आप लड़खड़ाते डंडोली शिला तक पधार लीला संवरण करी । सम्प्रदाय कल्पद्रुम में आयो है—

प्रकट भये गिरधरन के दामोदर बलवान ।
माघ कृष्ण आठम सुभग मुख शशि भुवि आन ।।

नन्द भूमि मुनिचन्द के रामजन्म तिथि अग्र ।
दामोदर उपनयन करि गिरधर गोकुल नग्र ॥
फिर आवत गोपालपुर दान घाटि परमान ।
शक्ति दीन गिरधरन उर दुष्ट गोरवन आन ॥
भोर होत गिरधरन के दर्शन करि सुख पाय ।
किय प्रयाण निज धाम कों भ्रातन पुत्र बुलाय ॥
तिलक पद दामोदरजी कों—
बहुरि सम्प्रदायाधिप भये दामोदर हरसाय ।
गोविन्द प्रभु गृह काम गहि उत्तर कर्म कराय ॥
सुष्ठु सवर्णिगेह लखि शुभ महूर्त बल पाय ।
श्री दामोदर लाल को किय विवाह हरखाय ॥

कुछ समय बाद श्रीनाथजी की प्रेरणा सूं ब्रज छोडवे को विचार ति. दामोदर जी के तीनों काकानने करिकें चुपचाप प्रभु सों दंडवत करि वि० १७२६ आश्विन शुक्ला १५ को शयनोपरान्त गिरिराजजी से गिरि गोवर्धननाथ कों गंगावाई के साथ प्रस्थान कियो । जगह जगह नित्य सेवा करते श्रीजी सों आज्ञा लेते आगरा पधारे । वहाँ बिराज गुप्त रूप से अन्नकूट में श्री नवनीत कों पधराय आगे बढ़े । कह्यो जाय है यहाँ ति० श्री दामोदरजी कों कछु क्षण सत्ता रूढ़न ने आपको कष्ट दियो पर वे शीघ्र ही छूटि के कृष्ण डंडोती घाट कोटा कृष्ण विलास, कृष्णगढ़ होते भये आप जोधपुर चापांसनी ६ मास विराजे । यहां ही चातुर्मास्य भयो और वहाँ से श्री गोस्वामि गोविन्दजी एवं श्री बालकृष्णजी मेवाड़ में आये और राणा रायसिंह जी से मिले । और श्रीनाथजी कों मेवाड़ बिराजवे के लियें विचार विनिमय कियो । राणा रायसिंह कों राज्यकाल १७०६ से १७३५ तक मान्यो जाय है । राणा अपनो परम सौभाग्य मानि प्रभु पधरायवे में अग्रसर होय । सारी सुविधा करी और अगवानी करी । बड़े गाजा बाजा सों धूमधाम सों प्रभु गोवर्धनोद्धरण धीर पधारे । आप बड़े कौतुकी है । राणा रायसिंह की इच्छा हती मेरे नगर उदयपुर में बिराजें । यहाँ सिहाड गाँव में एक पीपल वृक्ष के नीचे रथ ठहरि गयो । वि० १७२८ माघ कृष्णा ५ रविवार कों बड़े प्रयत्न किये परन्तु सरक्यो नहीं । ज्योतिषी बुलाये गये । किन्तु प्रभु इच्छा बलिष्ट मानी । वा समय श्री हरिराय जी वहाँ बिराजते हते । सर्वप्रथम वि० १७२१ में श्री द्वारिकानाथजी पधारे । वि० १७२४ में श्री विट्ठलवर पधारे । वा समय श्री हरिरायजी खिमनोर गाँव में बिराजते । जब श्रीजी पधारे तब सिंहाड गाँव में आप बिराजे । आपने श्री नाथद्वारा नाम राखि खेडा गाँव में मंदिर निर्माण करि खेड़ा माता कों वैष्णव बनाई तथा वशिष्ठी नदी बनास कों जमनाजी बड़ो मगरा गिरिराज; बादरा मगरा और बड़ोमगरा के बीच दानघाटी तथा द्वादश निकुञ्ज के भाव सों मंदिर द्वादश दर्वाजा; रतन चौक कमल चौक चार चौकादि तथा फूलघर, पानघर, बैठक, श्री निज मंदिर, शैया मंदिर एवं गोल देहली डोलतिवारी आदि अनेक भाव भावनायुक्त मंदिर श्री गो. तिलका दामोदरजी कूँ अगुवा करि बगवाये और वि० १७२८ फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को वेदमंत्र तथा भाव-भावनान सों प्रभु गोवर्धनधर कों पाट बैठाये ।

श्री गोवर्धन धरण को मन्दिर सिद्ध कराय ।
विनय कीन गोविन्द सों रायसिंह हरसाय ॥
फागण कृष्णा सप्तमी मीन लग्न गोविन्द ।
दामोदर को अग्र करि पधराये ब्रजचन्द ॥
करि शृंगार उत्साह सों दामोदर हरसाय ।
किय मनोरथ गिरधरन को श्री गोविन्द मन पाय ॥
दिगिप पक्ष भू मुनि विषय श्री गोवर्धन धरण ।
पाट स्थित ह्वै दरस दिय दैवी जन मनहरण ॥ (सं० क०)

सात ध्वजा सुदर्शन चक्रादि स्थापन करि तथा रथ में अड़ोकन रूप श्री भोले बाबा शंकर महादेव तथा मंदिर पिछवाड भैरव एवं हनुमानादि देव स्थापन करि लघु नगर निर्माण करायो और ब्रजवत् अष्टयाम सेवा तथा उत्सव महोत्सव करि प्रभु के अनेक लाड लडाये । हरिराय प्रणीत मंदिर भावना होयवे सें यहाँ संक्षेप में दियो है । गोस्वामि तिलकायत दामोदरजी की बैठक वर्तमान बैठक में तथा काका श्री वल्लभजी की बैठक वर्तमान वनमाली जी के मंदिर में श्री काका बालकृष्णजी की बैठक वर्तमान मदनमोहन जी के मंदिर में तथा गोविन्दजी की बैठक पीतम पोली में भट्टजी की बैठक जो वर्तमान में है वहाँ बिराजते ।

श्री हरिराय महाप्रभु ने अनेक सेवाक्रम भावनायुक्त लिखवाये तथा श्रीनाथ जी की सेवा में संलग्न रहि श्री दामोदरजी कूँ हर प्रकार सूं सहयोग दियो । या प्रकार सुखेन निवास करते वि० १७४३ भाद्रपद शुक्ला ६ को सर्वप्रथम मेवाड़ में आपके पुत्र रतन प्रकटे । वा समै राणा जयसिंहजी हते । आपने पुत्र प्रागट्य में बड़ो समारोह कियो तथा अनेक गाँव भेट दिये । आपके छः पुत्र भये । आप ही के पुत्र श्री गिरधरजी कूँ श्री हरिरायजी ने गोद लिये । आपके ६ पुत्रन के नाम हैं—

विट्ठलेशरायजी (१७४३), गिरधरजी (१७४५), गोविन्दजी (१७४८), मुरलीधरजी (१७५०), मथुरानाथजी (१७५२), एवं चिमनजी (१७५४)।

गो. श्री दामोदरजी ने प्रभु को विविध मनोरथादि करि वि. १७६० में लीला संवरण कीनी। नाथद्वारा में ही आपके बाद पुत्र श्री विट्ठलरायजी तिलकायत पदासीन भये। हरिराय महाप्रभू ने श्री नाथद्वारा मंदिर भावना तथा नगर भावना लिखी। अतः यहाँ श्री गोकुलनाथजी की सेवाक्रम में मंदिर निर्माण के साथ भावना—

भगवनमन्दिर अक्षर धाम। निज मंदिर वृन्दावन। भोग मंदिर जसोदा जी को घर। शैया मन्दिर निकुंज। द्वादश निकुंज स्वरूप शाकघर, फूलघर, पानघर, वस्त्र घर, दूध घर, गहना घर, मेवा घर, खांड घर। द्वादश कुंज है। इनमें ताँवूल घर गहना घर बरसानो, रावल, दूधघर गायन की खिरक खासा भण्डार नन्द गाँव जलधरा यमुना तट, डोलतिवारी सात्विक राजस तामस भक्त ऋजु साम; रतन चौक गोकुल जगमोहन, मणिकोठा, नन्दालय, हथिया पौर, वैष्णव सत्संग, सिह पौर, द्वारपाल, धौली पटिया। नौ सीढ़ी नवधा भक्ति, गोवर्धन चौक, गोवर्धन तरहटी, नगारखाना, गन्धर्वान्नरादि नृत्य स्थान। सिंह पौर के दोनों सिंह ज्ञान वैराग्य, हाथी पोल के दोनों हाथी तादृशी वैष्णव। या प्रकार सम्पूर्ण मन्दिर ब्रह्मधाम ध्वजाजी अभयदाता पुष्टि ध्वज। "जसोमति दधि मंथन करि बैठी ब्रह्मधाम" —सूरदास।

माघ कृष्णा ६—श्री रंगाजी की सेवा। शृंगार ऐच्छिक। **माघ कृष्णा—१०** श्री हंसाजी की सेवा। सोना के बंद। **माघ कृष्णा ११**—श्री केतकीजी की सेवा। आज यदि माघ में संक्रान्ति होय तो छींट के चाकदार धरें वागा पर टिपारा धरें। नीली छींट सोना के आभरण। **माघ कृष्णा १२**—श्री कावेरीजी की सेवा। **माघ कृष्णा २३**—फूल डोल को कर्तवी शृंगार :—

आज या माघ वदी में जब भी सेवावकाश होय यह शृंगार अवश्य होय। यह शृंगार श्री गोस्वामि दामोदर लालजी महाराज ने अपनी सूझ बूझ से सं० १९७३-७४ में प्रारम्भ कियो वह अद्यावधि होय है। डोलवत् शृंगार वनमाला को कर्णफूल चार चन्द्रिका सादा पिछवाई खण्ड, वस्त्र घेरदार वागा सूथन ठाडे वस्त्र यह सब लाल वेलवारी साटन के अधरंग चंदन चोवा की छींटवारी तथा अबीर की चिडियां। एक विरक्त वैष्णव ने चुकटी आटो मांगि-माँगि लाय चूरमा वाटी भोग धरी तथा भाव भावना सों चार भोग करिके डोल झुलाये। वार्ता के आधार पै यह शृंगार आपश्री ने कियो। तथा पद निम्न प्रकार के याही भाव के होय हैं। आज की शृंगार सेवा श्री सुगंधनीजी करे हैं।

मंगला—आज वन्यो नव रंग पियारो। शृंगार—एक रंग श्याम सदा तुम आज भये पचरंग। राजभोग—आज बन्यो नवरंग छबीलो। भोग—लालन नाहि नरी काहू के वस के। संध्यार्ति—यह छवि मोपे जात न वरणी। शयन—लाल तन चूनरी कीने आये।

माघ वदी १४—आज की सेवा कन्दर्पाजी करें। **माघ वदी ३०**—आज से प्रतिदिन पाँच दिन जरी धरें और वह जरी हरी लाल सोसनी पीरी तथा स्वेत। अथवा और रंग भी धरें। इनकी शृंगार साधिका ब्रज ललना चार हैं। पाँचमीं श्री ललिताजी हैं। शुभानना (हरी जरी) मधुरेणा (लाल जरी), मधुरा (सोसनी जरी) एवं कुंजरी (सफेद पीरी जरी)

माघ शुक्ला ४—दामोदर दास हरसानीजी को मनोरथ अथवा छेल्लो शीतकालिक जरी को क्रीट को शृंगार। यह दिवस उत्सववत् सर्वत्र पुष्टिमार्ग मन्दिरन में मानें। आज गुडकल की सामग्री सर्वत्र अरोगें। श्रीनाथजी में कार्तिक शुक्ला १५ वत् शृंगार होय। केवल पिछवाई सफेद जरी की धरें अथवा श्याम तारावारी आवे जो कार्तिक पूनम कूं आवे सो। शृंगार क्रीट हीरा को। अलक धरें। वागा सफेद जरी को चाकदार सूथन। मोजा। ठाड़े वस्त्र मेघश्याम आभरण हीरा मोती के जडाऊ। वनमाला को शृंगार।

(राग रामकली) मंगला—नन्द कुलचन्द उदित कौमुदी वृन्दा विपिनि विमल आकाशे। शृंगार—नवल ब्रजराज को लाल ठाडो सखी। राजभोग सम्मुख—बोलत श्याम मनोहर बैठे। भोग—वेन भाई वाजत री वंशीवट। आरती—यह छवि मोपे जात न वरणी। शयन में—कर शृंगार सायंकाल चली पिय दरसन को द्विविध गेन।

ललिताजी स्वरूप श्री दामोदरदास हरसानी—श्री गोस्वामि विट्ठलनाथ जी के हार्द श्री गोकुलेश है। याही प्रकार श्रीमद् वल्लभ महाप्रभु के हार्द श्री दामोदरदासजी है। इनके जीवन पृथक प्रकाशित है चुक्यो है। यहाँ संक्षेप में दियो जाय है। ये चार भाई है। जन्म से वैराग्य भावना वारे अपनी अलौकिक प्रतिभा से प्रभावित करिके लौकिक सुखन कों त्यागि के प्रेमाभक्ति की जिज्ञासा में सदा विकल रहते।

अपलक अपनी दृष्टी से पूर्ण पुरुषोत्तम की खोज में श्याम सुन्दर स्वरूप गुरु की प्रतीक्षा में झरोखा में ठाड़े। अकस्मात् श्री वल्लभ महाप्रभु पर्यटन करते वा नगर की ओर सूं निकसे। ये दौड़िके चरण शरण गये और तब सूं ऐसे दीवाने भये के सतत संग रहे। कबहू गुरु को साथ न छोड़्यो।

यमुना पुलिन पै सांसारिक जीवन के प्रति दयाद्र होयके जब महाप्रभु आचार्य जी चिन्ता मग्न भये। तब आप साथ में हते। प्रभु श्री गोवर्धनधर ने ब्रह्म संबंध की आज्ञा कीनी। आपहू सब सुनि रहे हते। आपसे श्री महाप्रभु वल्लभ ने पूछी "दमला कछु सुन्यो। आप बोले सुन्यो परि समझ्यो नहीं।" गुरु सन्मुख सत्य कहनो तथा अपुनो दैन्य भाव प्रकट करनो ये देखिके वल्लभ महाप्रभु ने आज्ञा कीनी 'दमला तेरे लिए मारग प्रकट कियो है।'

यासें आचार्य श्री को प्रथम श्रृंगार मुकुट को तो आपके उत्सव कों किरीट को विशेष सामग्री में गुडकल, शयन भीतर होंय। जब तक भूतल पै पुष्टिमार्ग रहेगो तब तक आपकी स्थिती येन केन प्रकार मानी गई है। इनमें ललिता भाव से सर्वत्र सदैव सब सेवामें वर्णन मिले है।

माघ शुक्ला ५ (वसन्त पंचमी)—याकों मदन पञ्चमी श्रीपंचमी भी कहें। श्री प्रद्युम्न प्रादुर्भावोत्सव हू माने है। यह उत्सब पूर्वोक्त उत्सवन में नूतन अनूठो रस भर्यो मान्यो जाय।

प्रश्न—क्योंजी चैत्र वैशाख मधु माधव कूं वसन्त माने फिर ४० दिन पहले ये वसन्तोत्सव कैसो अरु कायको ?

उत्तर—रितुन के गर्भाधान चालीस दिन पहले होंय है। यह कई पुराणन में प्रतिपादित है। यासों रितुराज के आरम्भ के चालीस दिन पूर्व ही पुष्टिमार्ग में उत्साहारम्भ वसन्त को करके चालीस ही दिन रसलीला दर्शन भगवदीय सुखानु भव करें।

मदन पंचमी—आज मदन महोत्सव राधे। —परमानन्द

श्री पंचमी—श्री पंचमी परम मंगल दिन मदनमहोत्सव। आज। —हरिजीवन

वसन्त पंचमी—आज शुभग दिन वसन्त पंचमी जसुमति करत वधाई। —हरिदास

आयो रितुराज आज पंचमी वसन्त साज। —छतीस्वामी

सूरसारावली में वसन्त शोभा—

नित्य धाम वृन्दावन—श्याम—नित्यरूप राधा व्रजवाम
नित्यरास जल नित्य बिहार—नित्य मान खण्डित अभिसार।
....
सनि-सुनि श्याम सूर मुसकाने। रितु वसन्त आयो हरसानी।

सर्वे वृन्दावन गुणैर्वसन्त इव लक्षितः
यत्रास्ते भगवान साक्षात् रामेण सह केशवः १०–१८–३

श्री हरिराय महाप्रभु

अब प्रथम वसंत पञ्चमी के दिन काम कों जन्म भयो है ताते रितु और कामदेव आपस में परम मित्र है।

"देखत वन व्रजनाथ आज सखी उपजत है अनुराग।
मानो मदन वसन्त मिले दोऊ खेलत डोलत फाग॥"

सो जहाँ कामदेव प्रथम मोहिवे को जात है तहाँ प्रथम वसन्त को प्रकाश करै तब वसन्त पञ्चमी को खेल होय है। खेल द्वारा काम कूं प्रकट किये। ताते होरी में सबन की समता हैवसन्त खेल दस दिन होय। होरी को खेल एक महीना। जाको अभिप्राय है कि वसन्त क्रीड़ा दश भाव वारी दस प्रकार की दस दिन की है। याही सो काम को पूजन होय है। लोक विषे आध्यात्मिक काम महादेव जी जराय दिये तय आधिदैविक काम प्रभू अंगीकार किये क्योंकि आप साक्षात मन्मथ है। दस दस दिन चारो भक्तन के मनोरथ के हैं। तासो चालीस दिन खेल होय है। दस दिन राजस लीला, होरी, धमार फाग दस दिन, तामस लीला दस दिन, सात्विक लीला दस दिन, निर्गुण लीला यों चालीस दिन होंय। निगुर्ण भक्ति में भक्त खूब उच्छृंखल होय के खेलें। पाँच दिन वसन्त संयोग पाँच दिन विप्रयोग या प्रकार सात्विक भक्तन को दस दिन खेल लीला होय। गुलाल स्वामिनी जी को हास्य, अबीर स्वामिनी को मुख चन्द्र है। ललिता स्वरुपालाल; चन्द्रावली जी स्वरूपास्वेत अवीर चोबा जमनाजी केशर (चन्दन) स्वामिनी जी कंचन वर्णी राधिका। या प्रकार श्रीजी में चार ही वस्तुन सो खेल होय। अनामिका अंगुली से टिप की लगाय खिलावें। क्योंकि तर्जनी दिखायवे को लक्ष साधन को है या को पद सूरदास जी ने वर्णन कियो है।

नेक मुह माँढन देहो होरी के खिलैया।
जो तुम चतुर खिलार कहावत अगुरिन को रस लै हो।

आज देहली वन्दनमाल हाडी अभ्यंग। सारो साज शीतकालिक समाप्त। आज से दस दिन श्री यमुना जी के भाव की सेवा श्री चन्द्रावलीजी की सेवान्तरगत। ठाडे वस्त्र लाल पाग बागा घेरदार सूथन स्वेत खण्डपाट स्वेत साज सब चांदी के आभरण मीना हरे लाल के श्रृंगार मध्य को कर्णफूल चार मोजा मेघश्याम मोर चन्द्रिका सादा लूम वाजू कड़ा पहुची आदि सब मीना के। आज नवधा भक्ति के प्रत्यक्ष में नव दर्शन होय प्रद्युम्न जी के प्राकट्य के लिये राजभोग वाद जयन्तिवत् दर्शन होंय। आरती दूसरी में होय।

मंगला—(धनाश्री) मेरो भाई माधो सों मन मान्यो। शृंगार होत में—अभ्यंग के आठ। शृंगार सन्मुख—आज ओर काल ओर दिन प्रतिदिन छवि ओर ओर। राजभोग सन्मुख—श्री विट्ठलेश कृत वसन्त अष्टपदी फागण शुक्ला १० तक गवे। प्रतिदिन राजभोग सन्मुख में—१–हरि रिह व्रज युवती सत संगे। २–ललित लवंग लता परिशीलन। ३–श्री पञ्चमी परम मंगल दिन। ४–खेलत वसन्त वर विट्ठलेश।

राजभोग सरे वाद वसन्ताधिवासन होय। घट स्थापन वसन्त को घट जल भर के तथा वामें पंचबाण के पाँच फल प्रतीक रूप धरें। आम्र मौर खजूर डाली सरसों हरे यव (जौ) तथा बेर एवं पुष्प या प्रकार लाल किनारी को पट उढायकर पूजन अधिवासन कियो जाय फेर दर्शन खुलें। प्रभु को खेल होय पञ्चसर–पांच वाणन के पाँच मुख—शोषण, दीपन, सम्मोहन, तापन, उन्माद

श्रीमद् भागवत प्रमाण–संदधेस्त्रं स्वधनुषि कामः पंचमुखं तदा। १२-८-२५

दूसरे भोग आवे तब ये पद गवे सामग्री अनसखडी अरोगै। गावत चली है वसन्त बधावन नन्दराय। सन्मुख दूसरे दर्शन में—नन्द के द्वार हम आई। उत्थापन—वसन्त बधावो चलो। भोग—आयो रितुराज आज। आरती—देखत वन व्रजनाथ। शयन सन्मुख—गोवर्धन की शिखर चारु पर। शयन भोग में—आयो रितुराज। दूध में—कुचगडुवा। मान में—ऐसो पत्र पठायो नृप वसन्त। पौढवे में—खेलत खेलत पोढी।

यह दिनभर की सेवा सब सखी मिलि करें परन्तु चन्द्रावली जी एवं श्री जमनाजी के अधिकार प्राप्तवाद नो दर्शन नवधा भक्ति रूप बारह महीना में आज के ही दिन होंय।

आज से झाझें बजें। सन्मुख मङ्गला में नहीं मान पोढवे जगायवे में नहीं। आज से लेकर राजभोग से वसन्त आरम्भ होय सो जैसे शृंगार तैसे भाव के वसन्त के पद गवें। डांडा रोपणी तक। कई पद दो दफे भी होंय। बाकी पूरे पद वसन्त के होंय। भाव यह जमना पुलिन में प्रकृति चित्रण रंग मंच स्थापन होये बाद ही रसलीलारम्भ होय आज से वसन्त में सूक्ष्म खेल ही होय कारण चार नायकन में धीर शान्त नायक होयके खेले। वसन्त में प्रियाप्रीतम को सब व्रजभक्त सहचरी खिलावें। आजसे ४० दिन तक नित्य खेल के साज आवें। जामें विविध प्रकार के फल फूल मेवा सब प्रकार की फिरती सामग्री बालभोग दूधघर शाकधरकी याको भाव होरी वसन्त खेल प्रभु श्रमित होय जांय तब अरोगावें व्रज भक्त अपनी अपनी ओरसूं ये चालीस दिन होरी धमार फाग वसन्त होय तत् तत् स्थानत में अरोगावे

माघ शु० ६—सफेद झाँई गुलावी वारे जामदानी के चाकदार। ठाडे वस्त्र हरे। कुल्हे स्वेत (गुलाबी) जोड़ चमक को। वनमाला को शृंगार। कुण्डल। श्री द्वारकानाथ जी के घर की सेवा यामें श्री जमना जी की सहचरी सेवा करें।

माघ शु० ७—स्वेत घेरदार पै गुलाबी फतवी खिडकी की पाग कतरा मीना के आभूषण यह शृंगार कृष्णावेसनी जो जमना जी की अन्तरंगा है उनके है ऐसे ही प्रथम दिन मथुरेश जी के घर की सेवा आज विट्ठलवर के घर की सेवा विट्ठलेशराय जी से गुडकल की सामग्री की चौकी। ठाडे वस्त्र श्याम।

माघ शु० ८—वस्त्र स्वेत घेरदार घुंडी नाका पाग कतरा छोटो शृंगार श्री गोकुलनाथ जी की आडी को तथा रसात्तिका जी की सेवा।

माघ शु० ९—बागा चाकदार फेंटा स्वेत फेंटा लाल मध्य को शृंगार। वसन्त गुसाईं जी की बालकन के भाव की चन्द्रमा जी के घर की सेवा तथा जमुना की सहचरी की आडी की सेवा।

खेलत वसन्त वर विट्ठलेश। खेलत वसन्त वल्लभ कुमार।
खेलत वसन्त गिरधरन लाल। खेलत वसंत वर विट्ठलेश।
आदि अनेक पद गवें—बन्दौं पद पंकज विट्ठलेश।

माघ शु० १०—पगा चाकदार बागा पगा श्री मदनमोहन जी के भाव सों तथा श्री जी की सेवा।

माघ शु० ११—चाकदार टिपारा जोड़ में घेरा तथा गोकर्ण वस्त्र रंगीन वनमाला को शृंगार कुण्डल यह शृंगार की ओर से तथा गुसाईं जी एवं श्री चन्द्रावली जी के प्रधान भाव सों सेवा होय।

माघ शु० १२—घेरदार बागा स्वेत केशरी पाग लटपटी पटका छोड़ को केसरी यह श्री मुकुन्द राय जी की ओर सों तथा छविधामाजी के भाव सों।

गावत चली सब वसंत बधावन नन्दराय दरबार।
बान बनि ठनि चोखमारख सों व्रज जन सब इकसार।
अंगिया लाल लसत तन सारी झूमक नव उरहार।
बेनी ग्रथित रुरत नितम्बपुर कहा कहूँ बड़े डेवार।
मृगमद आड बड़ेरी अखियाँ आँजी अंजनपूर।
प्रफुल्लित बदन हँसत दुलरावत मोहन जीवन मूर।
पग जेहर केहर कटि किंकनी रह्यो विथकित सुन मार।
घोष घोष प्रति गलिन गलिन प्रति बिछुअन की झंकार।

कंचन कुम्भ सीस पै लीने मदन सिन्धु तें भरि के ।
ढांपे पीत बसन जतन करि मौर मंजुरी धरिके ।
अबीर गुलाल अरगजा सोंधो विधिन जात विस्तारी ।
मैन सेन जौनार दैन कों कमल कमल कर थारी ।

माघ शु० १३—सेहरा मीना को केसरी वस्त्र चाकदार बागा पटका छोड़ के वनमाला को शृंगार सेहरा के भाव की वसन्त तथा ये पद आज ही होय यह श्री स्वामिनी जी के भाव सों जो श्री वल्लभ महाप्रभु रूपा की सेवाक्रम ।

देख वन की चेनराधे, खेल खेंल हो लडेती श्री राधे; भामिनी चम्पे की कली चलि राधे तोहि श्याम बुलावे । आदि

आज चम्पा की कली धरें स्वर्ण की तासों यह पद शृंगार में अवश्य गवे ।

भामिनी चम्पे की कली ।
वदन पराग मधुर रस लम्पट नवरंग लाल अली ।
....
पहुँची जाय सिंध पौरी अब विपुल युवति समुदाई ।
निज मन्दिर ते निकसि यशोदा सम्मुख आगे आई ।
भई भीर भीतर भवनन में जहाँ ब्रजराज किशोर ।
भरत भावते प्रान पिया कों घेरि फेरि चहुँ ओर ।
ब्रजरानी जब मुर मुसकानी पकरन भई जब करकी ।
ले संग सखी लखी कछु बतियां मिस ही मिसडतसरकी ।
कुंकुम रंग सो भर पिचकारी छिरके जे सुकुमारी ।
बरजत छींटे जात दृगन में धन वे पोछन हारी ।
चंदन वंदन चोवा मथि के नील कंज लपटावे ।
अलका सिथिल अरु पाग शिथिल अति पुनि वेपाधबनावे ।
भरत निसंक भरे अंकवारी भुजन बीच भुज मेले ।
उन्मद ग्वाल वदन नहि काहू झेल खेल रस झेले ।

माघ सदी १४—ऐच्छिक क्रीट भी धरें तथा लाल पाग लाल पटका सफेद घेरदार वागाये भी धरें । यह शृंगार श्री हरिरायजी की ओर से मानें तथा श्री स्वामिनीजी की सेविका श्री ललिताजी के भाव सों होय । **वसन्त में पुष्टि साहित्य की विशेषतायें शुद्ध साहित्य**—अष्ट निधियों के स्वरूप की झलक **वसन्त के पदों में** वनगोचारी होवे से ये पद—

(१) हरिजु के आवन की बलिहारी ।
....
परमानन्द स्वामि हित कारण जसुमति नन्द सनेह ।।

(२) रास रसिक निकुंज नायक—
कसुमित वन देखन चली आज ।
तहाँ सदा वसो मन सूरदास ।
कियो रंग भगो ललित त्रिभंगी भयो ग्वाल मन गायो ।
चत्रभुज प्रभु गिरधरन लाल छवि देखेही बनि आवै ।।

(३) स्वामिनीजी की सभा में पधार चतुर्भुज स्वरूप भये ताको भाव—
आयो जान्यो हरिजु रितु वसन्त । ललना सुख दीनो तुरन्त ।।
.... ।
वासर हु सुख देत जाम । सूरदास प्रभु कत काम ।

(४) येही श्रीजी कहे जाय संग में स्वामिनी दो हैं :—
नवल वसन्त खेलत गोवर्धनधारी ।
कृष्णदास प्रभु श्रीमुख निरखत बलि बलिहार ।

(५) चन्द्रोदय स्वरूप—
रतन जटित पिचकाई कर लिये भरत लाल को भावे ।
चत्रभुज प्रभु गिरधरन लालन छवि मोपे वरनी न जाई ।

(६) आज मदनमोहन बने उपमा को कोहे ।
रति पति राजा पाय वांध्यो हू न सोहे ।
कोटि सुधा निधि शीतल जोहे ।
देखत वदन त्रिताप न सोहे ।
ऐसी कोन नागरी जो त्रिमिष दिछोहै ।
प्रभु रघुनाथदास व्रज जन मोहे ।
.... ।

(७) गोवर्धन की शिखर चारु पर फूली नव मालती जाई ।
छीतस्वामि ब्रज जुवति यूथ में बिहरत है गोकुल के राई ।

सेवाक्रम वसन्त पद में :—
गावत वसन्त चली वन वीर वागें ।
वल्लभ रिझायवे को मिलि अनुरागें ।
एक तो पहरावे वागों एक सोधो लगावे ।
एक तो चंदन छिर के एक अबीर उडावे ।
एक तो पान खवावे एक दर्पन दिखावे ।
एक तो पंखा करे एक चवँर ढुरावे ।

आरती करके सब किये मन भाये।
वृन्दावन चन्द बहु भातन रिझाये।

अष्ट सखीन की अष्ट विधी सेवा उनके नाम तथा अन्नकूट फागण के शृंगारन में वर्णित करेंगे।

वसंत—

जो नायक सों उरलिये बोले प्रेम समेत।
ता मध्या को कहत है प्रगल्भ वचना हेत॥
लाल गुपाल गुलाल हमारी आँख न में जिन डारो।
.....
नागरि नायक सब सुखदायक कृष्णदास को तारो।
रहो रहो जु विहारी जू मेरी आखिन में बूका जिनमें लो।
हरिदास के स्वामी को हँस खेले मुख कहा पैये यह सुख मन को।

प्रौढ़ा (अधीरा धोरा)—

एक बोल बोलो नन्द नन्दन तो खेलों तुम संग।
परसो जिन काहू को प्यारे आन अंगना अंग।
बरजत हो वीरी काहू की जसुमति सुत जिन लेहो।
परिरम्भन आलिंगन चुम्बन नैन सैन जिन देहो।
मेरे खेल बीच कोऊ भामिनी आन लाल को भरि है।
प्राणनाथ हो कहे देत हो मोते सही न परि है।
प्रभु मुहि भरे भरो हो प्रभु को खेले कुंज बिहारी।
अग्र स्वामि सों कहत स्वामिनी रंग उपजेगो भारी।

प्रौढ़ धीर धीरा— (बोले धीर अधीर)

अरुण अबीर जिन डारो लालन दुखत आँख हमारी।
धोंधी के प्रभु तुम बहु नायक निश दिन रहत हंकारी।

मान में पत्र द्वारा संदेश भेजनो—

ऐसे पत्र पठायो नृप वसन्त, तुम तजो मान माननी तुरन्त।
.....।
सूरदास यों वदत वान, हरि भज गोपी तज सयान।

या प्रकार के स्वरूप श्री स्वामिनीजी श्री श्यामसुन्दर तथा मुख वर्णन, नेत्र वर्णन, कुच वर्णनादि सुन्दर ढंग से वर्णित कियो।

कुच गढुवा जोवन मोर कंचुकी। राजा अनंग मंत्री गोपाल।
देखो प्यारी कुंज विहारी मूरतवंत वसन्त।
तेरी नवल तरुणता नव वसन्त।

या प्रकार पदन में सरस वसन्त वर्णन कर्‌यो। ये दस दिन श्री जमुनाजी के हैं। पूर्णता में डंडा रोपिणी को उत्सव आपही को है।

वसन्तोत्सव के ४० दिनन की व्याख्या—

चालीस दिन की सेवा में वसन्त दसदिन। दसही दिन धमार दस दिन फाग दस दिन होरी।

इन दिनन में प्रिया प्रीतम को बैठाय के शान्त भाव सों सूक्ष्म खेल करायके प्रकृति सौंदर्य के दर्शन करें जैसे :—

तेरी नवल तरुणता नव वसंत। नव नव विलाश उपजत अनन्त।
नव अरुण अधर पल्लव रसाल। फूले विमल कमल लोचन विशाल॥
.....
तिहि मिल विलस्यो चाहत है श्याम। जाहि देखत लज्जित कोटि काम॥ आदि

या प्रकार सौन्दर्य मूर्ति श्याम व्रज श्याम को सुखद वसन्त स्वरूप को वर्णन भक्त गाय गाय रिझावें और श्री यमुनाजी के भाव सों ही सेवा होय।

श्याम सुन्दर का वसन्त स्वरूप :

देखो प्यारी कुंज विहारी मूरतमंत वसन्त।
मोर तरुन तरुलता तन में मनसिज रस वरसंत।
.....
सहज सवा स्वास मलयानिल लागत परत सुहाये।
श्री राधा माधवी गदाधर प्रभु पर सत सयेखपु।

धमार :—

धमार के अच्छे खिलवार कों समस्तमण्डली लेवे जाय और घर में घुसिकै जा रूप में होय—खातो, न्हातो, ठाडो जहाँ कहूँ छिपिके बैठ्यो होय चाहै पुरुष होय या ललना; उनकूँ वे ललना एवं ग्वाल घुसिकै अपने टोल में लावें और अपने संग लै जांय। ये दस दिन चन्द्रावली जी जो समानाधिकारिणी झकझोरी करि सकें तथा प्राण प्रिया प्राण प्यारे सों अपने को रसमत्त बनावें। एकम फाल्गुन कृष्णा सों धमारारम्भ होय। दशमी तक दस दिन व्रज भक्त कन्हैयाये पकरिवे को यत्न करें।

पकरि पानि गहि मार पोरिया जसुमति पकरि नचाई।
हरि भागे हलधरहू भागे नन्दनन्दन हू हेरे।

तब ही मोहन निकसि द्वार ह्वै सखा नाम लै टेरे।
द्वार पुकार सुनत नही कोऊ तब हरि चढे अटारी।
आओ रे आओ संगी सब घर घेर्यो ब्रजनारी।
सुनत टेर संगी सब दौरे जब अपने अपने धाम।
अर्जुन तोक कृष्ण मधु मंगल सुबल सुबाहु श्रीदाम।
ग्वालन दौरी पौरी जब रोकी आन न पाये नेरे।
चन्द्रावली ललितादि आदि दै श्याम मनोहर घेरे।
कित जैहो बस परे हमारे भजि न सको नन्द लाला।
फगुवा में मुरली हम लैहैं पीताम्बर वनमाला।
केशर डारी सीसते मुख रोरी माँडत राधे।
विष्णुदास भुज गहि गाढे मन वाँछित फल साधे।

फाग :—

फाग में नाचते गाते वजाते अपने अपने टोलन सों गली गली मुहल्लन में जांय। कोऊ ठाडी होय वाय संग लै गुलाल अबीर उड़ाते भये पिचकारी चलाते गावते रस बरसा करते फाग को खेल दिन भर होय। याके वर्णन बहुत भाँति सों भगवदीयन ने वर्णन किये। केवल एक ही पद यहाँ दियो जाय है।

छैल छबीलो ढोटा रस भर्यो बाकी चितवन मोह मरोर।
खेलन बहु छन्द फन्द कर ले जु गयो चितचोर।
.....
श्री विट्ठल गिरिधरन गये मेरे हियरे चटक लगाय।

या प्रकार प्राणनाथ श्री कृष्ण रंस माते हैके फाग खेलत भये ब्रजभक्तन को सनाथ करते पधारें। गोकुल की गलीन में, बरसाने की गलीन में घूमघूम मस्ती सो गाते बजावते नाचते पधारें।

होरी :—

होरी में दो दल बने और गाँव के बाहर चौक में खेल होय वामें एक दल दूसरे दल के खिलवैया को अपने दल में ले जाय मुरली छीन के साड़ी पहराय सखी बनावे। अपने दल से बाहर न जायवे दे। जब हा हा खाय तब छोड़ै।

(१) अरी चल नवल किसोरी गोरी होरी खेलन जाय नन्द।

(२) या गोकुल के चौहरे रंग राची ग्वाल।
ए चलि जाय जहां हरि खेलत गोपिन संगा (राघव)
मानो ब्रजते करणी चली मदमाती हो (ब्रजपति)

गहवर वन, बंसीवट, यमुनातीर, वृन्दाबन की कुंजन के बरसाने नन्दगाँव साँकरीखोर, ब्रज, गोवर्धन, गोकुल पनघट आदि स्थानन के वर्णन मिले हैं।

डांडा रोपिणी को उत्सव [श्री हरिराय जी की भावना]

कन्दर्प को आरोपण करें। फागण वदी एकम से पन्द्रह दिन काम चढे; पन्द्रह दिन काम उतरे वह नायिका के अंगन सों काम उतरे चढ़े। होरी होय याते पूर्व चौक में गांव बाहर डांडारोपण करें यासे ब्रजभक्तन को सुखदानार्थ प्रभु क्रीडा करें। यमुना पुलिन गिरिराज वृन्दावन कुंज निकुंजन में डंडा रोपण होय जहाँ जहाँ खेल तहाँ गाँव के बीच डंडा रोपें ध्वजा फहरायें। ब्राह्मण सों स्वस्तिवाचन करावें। एक मास होरी खेलें सो जीत हार को प्रतीक होंय तो सुखेन एक मास निर्विघ्नता पूर्वक खेल होंय। ब्राह्मण द्वारा वेद ध्वनी करावे। नन्दराय जी वृषभानजी बड़े गोप, यशोदाजी, गोपी, गोपाल, बलदेव आदि समस्त दंडवत् करें। फेर धमार को आरम्भ होय।

आनन्द राय खेले फाग रितु वसन्त संग खेलिये।

फेर नन्द बाबा को गठ जोड़ा कीरती रानी सो जशोदाजी को गठ जोडा वृषभान जी सो बाँध विविध प्रकार की रसलीला क्रीडा हास विनोद प्रारम्भ होय है।

देहली वन्दनमाल हांडी अभ्यंग वस्त्र स्वेत घेरदार वागा सूथन पाग, खिड़की की चोली चोवा की। ठाडे वस्त्र मंगल आभरण सोना के कतरा लूम को। मोरपक्ष की पहले मोर चन्द्रिका फेंट भरे पिचकारी आवे। भारी कपोल मढ़ें। पिछवाई खण्ड स्वेत। यदि रोपणी को महूर्त सबेरे होय तो धमार सांझ कूं आरम्भ होय।

रोपणी प्रातः होय तो ये पद गवे।

मंगला—साँची कहो मनमोहन तो खेलो। अभ्यंग के चार—चली मरन गिरधरन। **शृंगार में**—घोष नृपति सुतगाइये। **राजभोग आ०**—नन्द सुवन व्रज भामतो। **राजभोग स.**—आनन्दराय खेले फाग। **उत्थापन**—गोरी गोरी गुजरिया। **भो० भाव**—रितु वसन्त सुख खेलिये। **शयन**—नवल कुँवर व्रजराय को।

रोपणी सायं होय तो ये पद गवें।

मंगला—साँची कहो मनमोहन। **शृंगार में**—चटकीली चोली को। **राज**—खेलन फाग चली कुच गडुवा जोवन मोर। **उत्थापन—भोग**—देखत बन व्रजनाथ। **शयन**—रितु वसन्त सुख खेलिये।

आज की दिन भर की सेवा के भाव सों पद होय। आज चोबा की चोली सादा आवे। केवल चोली नहीं। मोजा केसरी अथवा लाल धरें। शृंगार मध्य को छोटो। हार चार पत्ता के। बंधना धरें। सोना के लूम छोटी धरें। कर्णफूल को शृंगार।

फागण कृष्णा १—यदि डंडारोपण सांझ को होय तो ये पद आज गवें।

(१) आनन्दराय खेले फाग सो हो हो होरी आई।
लाल गिरधर काज अपने गृह नोल बुलाई।

(२) डांडोरोपन चले नन्द अरु गिरवरधारी।
बाजे बहुति बजावत लाल परवा बजे थारी।
.....।

(३) चन्द्रावली राधाजु भीतर ही रस हीये।
एको पल नहिं छांड़त डोलत लालन लीये।
श्री विट्ठल गिरधर को हँसि-हँसि फाग खिलायो।

फागण में श्रीनाथजी कुल्हे एक ही न धरें। ताको कारण कुल्हे को शृंगार बाल भाव को माने। होरी लीला, फागलीला किशोर लीला है। यासों नहीं धरें। सेहरा मुकुट टिपारा धरें तथा या मास में घेरदार जादा अधिक। मोर-चन्द्रिका हू धरें।

छज्जेदार सफेद चाकदार बागा श्रीमस्तक पै नागफणी को। कतरा मध्य को। कर्णफूल को शृंगार। ठाडे वस्त्र। श्याम आभरण मीना के। होरी डांडा सांझ को होय तो भी यह पद गवें—

मंगला—नन्द सुवन व्रज भामतो। शृंगार स०—उपरोक्त पद ही चले। राजभोग—घोष नृपति सुत गाइये। श्रीलछमन कुल गाइये। भोग में—रितु वसन्त सुख खेलिये। आरती—रितु वसन्त सुख खेलिये। शयन—सब व्रज कुल के राय लाल। पौढवे—खेलत पौढी श्रीराधें।

आज को शृंगार सेवा की आज से चनद्रवली जी की सेवा दस दिन तक आरम्भ है कै फागण कृष्णा १० तक।

फागण कृष्णा २—आज श्रीजी की सेवा शृंगार आदि। वस्त्र सादा हरें। घेरदार गुलाल की चोली सोभा के आभरण। ठाडे वस्त्र खुलते भये। मोजा शृंगार एकदम छोटो। चार कंठी पहुची बाजू सोना की। लाल चोली पर खुलमां छोटो कर्णफूल को कटि को पटका पिछवाई खण्ड सफेद। या शृंगार के भाव को एक पद। (राग विलावल)—

वदत नाहिं ग्वालनी जोवन के गारें।
या व्रज में ऐंडी फिरे मन्मथ उपचारें।
.....

दीरघ लोचन छवि छटा कजरा अनियारें।
जगन्नाथ कविराय के प्रभु मोही कान्हर कारें।
या पद के आधार सों ही ये शृंगार होय है।

फागण कृष्णा ३—ग्वाल पगा धरें सफेद वागा चाकदार मीना के आभरण ये शृंगार सुभाननाजी को होय है।

मंगला—गोपी हो नन्दराय घर माँगन फगुणा। रा०—खेलत मनमोहना रितु। भोग—ललना खेलत फाग बन्यो। शयन—प्रथम शीश धरि चरणन यह शृंगार।

फागण कृष्णा ४—आज को शृंगार केसरी दुहेरा किनारी को। घेरदार बागा सूथन। पाग सादा छोर को पटका मोर चन्द्रिका सफेद मीना के आभरण मेघश्याम ठाडे वस्त्र। आज को शृंगार श्री माधवीजी के भाव सों होय है तथा—खेलत नवल किशोर व्रज में—के पद आधार पर।

मंगला—रंगीले छबीले नेना रस भरे। शृंगार—भले आये श्याम तुम होरी खेलत। राजभोग—हरी संग खेलन जाय अरी चलि वेग छबीली। भोग आरती—खेलत नन्द किशोर व्रज में। शयन में—गोकुल सकल गुलाल खेलत घर घर।

फागण कृष्णा ५—धीरोद्धत नायक जैसो वीर रस वारो टिपारा को शृंगार। चढ़ी आस्तीन के वागा चाकदार। सफेद श्रीमस्तक पर टिपारा कुण्डल जोड मयूर पक्ष को। वनमाला को शृंगार आभरण मीना के यह शृंगारादि आगे पीछे होय सके है। आज की सेवा चन्द्रावलीजी की सखी श्री मालतीजी की है।

मंगला में—छोटी धमार लछमन कुल गाइये। शृंगार—नाच के भाव के पद गवे। राजभोग में—नन्दराय लला व्रजराय लला। हो हो बोलत। डोलत मोहन खेलत होरी। भोग में—आज वनठन खेलत फाग निकस्यो नन्द दुलारो। आरती—अपने रंगीले व्रज में खेलत नन्द को। शयन—व्रजराय लड़ैतो गाइये गोवर्धन राय लाला। यह शृंगार मारू राग धमार के आधार पर टिपारा को है

फागण कृष्णा ६—चाकदार वागा फेटा मध्य को शृंगार। कर्णफूल को शृंगार ठाडे वस्त्र खुलमा श्याम धरे। लाल मीना के आभरण आज को शृंगार एवं सेवा सारी चतुराजी की ओर से है।

मंगला—हो हो तेरी खेलन जैये—अथवा तुम भले आये। शृंगार—खेलत वलि मोहना। राजभोग—खेलो होरी फाग सबे मिल झूमक गावे। भोग आरती—मन को मोहना खेले फाग हो हो होरी। शयन—श्री वल्लभ कुल मंडन प्रकटे श्री विट्ठलनाथ।

स्वैरुत्तरीयैः कुच कुंकुमाङ्कितैः । १०–३२–१३

"तद्देशस्थानां स्त्री वस्त्राणि त्रीणिभवन्ति । परिधानीयं कुच पट्टिका उपरि वस्त्रंच । सर्वाभिरेव स्वोपरि वस्त्राणि आसनार्थं ददाति ।" तथा "योगेश्वरान्तर्हृदि कल्पितासन इति ।" योगेस्वराणां हृदयं शुद्धं । तत्राप्यन्तर्हृदयम् । तत्रापि कल्पित मेव भगवदासनम् । नतु कृप्तं । मानसीमूर्तिस्तिष्ठति । नतु कदाचिदपिस्वयमुपविष्ट इति मुख्यमासनमेतदेव ।

याही ते आसन मुख्य दियो गयो । बैठायो गयो । याही कूँ पाट बैठानो कह्यौ । तथा पूजा प्रकार सेवा प्रकार में बैठायकर सेवा तथा पूजा करी जाय है । सुदामा माली के यहाँ प्रभु पधारे और वहाँ आसन पै बैठाय कै पूजा करी ।

ततः सुदाम्नोभवनं मालाकारस्य जग्मतु ।

पूजां सानुगयोश्चक्रेश्राक् ताम्बुलानुलेपने ।। [१०–४१–४३–४४ भाग]

याही प्रकार आचार्य वल्लभ महाप्रभु ने त्रिविध नामावली में "वायक सुदांमा भक्तायलंकृताय नमः" कह्यौ है ।

धर्मराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अग्र पूजा में विराजमान करके पूजा कीनी गई । श्रुत्वा द्विजेरितंराजा ज्ञात्वा हार्द सभासदाम् [भाग. १०/७४/२६-२७]

सभार्यः सानुजामात्यः सकुटुम्बोऽवहन्मुदा ।

आचार्य वल्लभ महाप्रभु ने भी त्रिविध नामावली में आपको नाम "राजसूयादि धर्मप्रवर्त्तकायनमः" कह्यौ है । इन आधारन से पाठ बैठानो निरधारित भयो । श्रीनाथजी में सिंहासन नहीं है वहाँ चौतरी चौकी पाटवत् है । गोपियन के परिधान में बिराजनोही एक सिलाखण्ड पै स्थित होयके चारों ओर गोपी मण्डल में आप स्थित हैं । अन्य घरन में सिंहासन होय है । हिंडोला में भी चौकी ही होय है । अतः यह पाटोत्सव सिद्ध भयो ।

यह पाटोत्सव फाल्गुन कृष्णा सप्तमी कूँ ही क्यों ?

षड्धर्मयुत तथा सातवें धर्मी सर्व लीला विशिष्ट श्रीजी हैं। गढा की राणी दुर्गावती द्वारा मथुरा में एक भवन आचार्य श्री विट्ठलनाथ जी (गुसाईं) के लिए निर्मित कियो गयो वामें गुसाईंजी केसातों बालकन के नाम सूँ सतधरा बन्यो वामें सर्वप्रथम निवास के पूर्व श्रीनाथजी कूँ आज के दिन पधरायो गयो या कारण सूँ सतधरा में विराजमान करिके सेवा पूजा द्वारा सर्वस्व समर्पण करि रिझायो गयो। ताते ये पाटोत्सव कह्यो गयो ।

श्रीनाथजी को पाटोत्सव—

श्री हरिरायजी कृत श्रीनाथजी के पाटोत्सव की भावना में—आचार्य महाप्रभु श्री वल्लभजी को श्रीनाथजी आज्ञा किये कि मोकूँ पाट बैठाओ ओर मेरी सेवा प्रकट करो । तब आचार्य महाप्रभु ने एक छोटो सो मंदिर सिद्ध कराय ता मंदिर में श्रीनाथजी को पाट बैठायो । श्रीजी के नवीन मन्दिर को आरम्भ १५५६ वैशाख शुक्ला ३ को भयो । तथा १५७६ वैशाख शुक्ला तीज को अक्षय तृतीया को पाट बिराजे । बाद श्रीनाथजी ने गुसाईंजी विट्ठलनाथजी के जेष्ठ पुत्र श्री गिरधरजी सो आज्ञा किये । ये तुमारे घर मथुरा में है वाय देखबे चलूँगो । यह मंदिर गढ़ा की दुर्गावती राणी के आग्रह सो बन्यो तथा श्रीनाथजी मधुपुरी को पावन करवे पधारें ।

श्री गोवर्धननाथ ये—गिरधर को मन पाय ।
होरी खेलन मधुपुरी चलन कह्यो मुसकाय ।
श्री गोवर्धन की शिखरते गिरधरलाल सुजान ।
पधराये गिरधरन को निज इच्छा पहचान ।
सोलह सो तेईस के कृष्णपुरी मध आय ।
फागन बद सातम सुभग कर्‌यो मनोर्थ हरसाय ।

मथुरा में वि० १६२७ फागण कृष्णा ७ गुरुवार कों पाट बैठाये और पाटोत्सव सर्वत्र प्रसिद्ध भयो । सभी गोस्वामी बालक बहू बेटीन ने मिलकर खिलाये और गिरधरजी ने अपनो सर्वस्व भेंट (समर्पण) कर परदनी पहरिकै बाहर निकस गये । वहीं अद्यावधि श्रीजी में प्राचीन चौखटा में समस्त आभूषण जटित है । गिरधरजी की वह सेवा दर्शनीय है ।

"भेट कीन निज गृह सकल गिरधर लाल कृपाल ।
घर घर प्रति मथुरा विशे आनन्द भयहु विशाल ।"

श्रीनाथ जी

श्रीनाथ जी को पाटोत्सव परिचय :—

पाट—आसन अर्थात् सिंहासन पै विराजमान करनो ही पाट बैठानो है । या उत्सव कूं पाटोत्सव कहैं हैं । भगवान् श्री कृष्ण को आसन–सिंहासन पाट बैठावे को वर्णन श्रीमद् भागवत में कई स्थानन में मिलै है । यहाँ दो तीन उदाहरण प्रस्तुत हैं :—सर्वप्रथम रासपञ्चाध्यायी में गोपी गीत के पश्चात् प्रभु को प्राकट्य भयो । दर्शनोपरान्त उत्तरीय के आसन पै विराजमान करवे को वर्णन है । श्री सुबोधिनी जी में आयो है—

श्री गोवर्धननाथ पे गिरधर को मन पाय।
होरी खेलन मधुपुरी चलन कह्यो मुसकाय ।।
श्री गोवर्धन के शिखर ते गिरधरलाल सुजान ।
पधराये गिरधरन कों निज इच्छा पहचान ।।
सोलहसो तेइसके कृष्णपुरी मध आय ।
फागन सुद सातम सुभग किय मनोरथ हरसाय ।।

इस आधार से वि० १६२३ फाल्गुन कृष्णा ७ को मथुरा सतधरा पधारे वहां समस्त गोस्वामि बालकों ने बहू बेटिन ने सर्वस्य समर्पण कियो वाइको श्रीनाथ जी नाथद्वारा में प्राचीन चोखटा अद्यावधि दर्शन दे रह्यो है उनके आभूषणों से सुसज्जित श्री गुसाईंजी के प्रथम पुत्र गिरधर जी ने जब श्रीनाथजी को जती पुरा ते मथुरा पधराये और उस समय षडैश्वर्यता कैसी ही वाको वर्णन या प्रकार है—ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य

ऐश्वर्य—समस्त सेवामें विशेष सामग्रीयां अरोगानो तथा ठाट बाट से प्रभु को लाड़लड़ानो ये ऐश्वर्य भयो ।

वीर्य—यात्रागमन में अनेक प्रकार के कष्टन कूँ दूर करते भए पधरानो यह वीर्य भयो ।

यश—श्रीनाथजी की विविधलीलान को दर्शन कर अपने परिजन पुरजन कुटुम्बीयन को रसास्वादन श्री जीं की लीला का करानो यह यश भयो ।

श्री—भगवत्स्वरूपात्मक सार रूप पुष्टि पुरुषोत्तम को प्रसन्न करनो ही श्री भयो ।

ज्ञान—आचार विचार छूआछूत सखडी अनसखडी प्रसादि अनप्रसादिको ज्ञान पूर्वक सेवा में लानो ही ज्ञान भयो ।

वैराग्य—सर्वस्व समर्पण करके सेवा धर्म द्वारा निरोध करानो ही वैराग्य भयो ।

पुष्टि मार्ग में श्रीनाथजी के पाटोत्सव की विशेषता :—

समस्त पुष्टिमार्ग के आचार्य सात ही धर से सी निर्धारित है तथा समस्त वैष्णव इनके ही सेवक होवे से यह महोत्सव वत् सर्वत्र मान्य है ।

आज समस्त घरन में श्री नाथजी की भावना पधरायकर खेल खिलाते रंगन से तथा मनोरथ मान विविध सामग्री अरोगावे हैं ।

आज से स्वाँग बनाते जाँय देव मनुज गन्धर्वों की मूर्तियाँ मानव बन प्रभु सन्निधि नचावे हैं यासे प्रभु बाल रूप आनन्दित होंय ।

आज से अरोगवे में कई सामग्री विशेष चालू होय है । आज के ही दिन खोये भए श्री गोकुल चन्द्रमा जी पुनः पधारे पुष्टिमार्ग के सभी घरन में गायो जाय यह धमार होरी लीला के वर्णन की है । यामें श्रीनाथजी को जतीपुरा से मथुरा पधारवे को वर्णन भी ध्वनी से स्पष्ट होय है ।

धन धन नन्द जसोमति धन श्री गोकुल गाँय ।
धन्य कुँवर दोऊ लाडले मनमोहन जाको नाम ।।
छबीले ललना श्री वल्लभ राजकुमार ललना ।
श्री गिरिवर धारी लाल छबीले ललना ।।
तुम या गोकुल के चन्द ललना ।
सखा नाम ले बोलियो सुबल तोक श्रीदाम ।
श्रवण सुनत सब धाइयो बोलत सुन्दर श्याम ।
भेष बिचित्र बनाइयो भूषण वसन शृंगार ।
मन्दिर ते सब सजि चले बालक बलि बनवार ।
गिरवर धर रस भरे मुरली मधुर बजाय ।
श्रवण सुनत सब ब्रज वधू जहाँ तहाँ ते चली धाय ।
झांझ मुरजडफ झालरी बाजे बहु बिध साज ।
बिच बिच भेरी जु बाजही रह्यो घोष सब गाय ।
पिचकारी कर कनक की अरगजा कुंकुम घोर ।
प्राण पिया पै छिरकही तकि तकि नवल किशोर ।
एक ओर युवती भई एक ओर बलवीर ।
कमलन मार मचाइयो रूपे सुभट रनधीर ।
उलटि आय ठाड़ी भई अपने अपने टोल ।
झूमक केरव गावही बीच बीच मधुरे बोल ।
हँसत हँसत सब आइयो लीने सुबल बुलाय ।
हा हा काहू भाति सों मोहन को पकराय ।
बहुरि सिमट सब धाइयो मोहन लीने घेर ।
नेनन अंजन आजि के हसत वदन मन हेर ।
यह विधि होरी खेल ही सकल घोष संग लाय ।
गोवर्धनधर रूप में जन गोविन्द बलिबलि जाय ।

इसके दो अर्थ होते हैं । पहलो अर्थ होरी खेल को । दूसरा अर्थ श्रीनाथजी के पधारवे को ।

श्रीनाथजी में पाटोत्वस की विशेषता—आज चोवा की चोली धरें। आज ही १०८ दिन में वर्णन के दर्शन होय। (मोजा बड़े होंय)। आज से उपंग बजनो सुरू होय। आज से स्वाँग बनने आरम्भ हैके होली तक प्रतिदिन देव गन्धर्व मनुजन की प्रतिकृति कीनी जाय है। आज से चौपाई, कमल चौक में सुरू होकर डोल तक रतन चौक में गवे हैं। आज गुलाल पोटली से उठे है तथा आज के दिन समस्त गोस्वामि बालक बहू बेटी श्रीजी को खिलावे हैं। अबीर गुलाल चोवा चन्दन से।

ब्रजसाहित्य में पाट बैठावे पाट सिंहासन विराजवे को वर्णन या प्रकार है। राघवदासजी की धमार में पाट बैठायकर राज्य वर्णन या प्रकार कियो है।

ए चलि जाय जहाँ हरि खेलत गोपिन संगा।
दुतिया मोहन तन राजत सुन्दर पीत सुवास।
बैठ कनक सिंहासन बलि-बलि राघवदास।

गोविन्द स्वामी का दुतिया पाट सिंहासन वर्णन—

परिवा सकलघोष जन भानुसुता चले न्हान।
अरगजा अंग चढ़ाइयो विमल वसन परिधान।
दुतिया बंदन बाँधियो सिंहासन युवराज।
छत्र चँवर गोविन्द गहे श्री वल्लभ कुल सिरताज।

परमानन्ददास जी दुतिया पाट बैठायकर राज्य देते को वर्णन—

लालन देखिये। भवन हमारो।
परमानन्द दास को ठाकुर कछू कह्यो हमरो कीजे।

अतः पाटोत्सव पाट बैठानो स्थिरता से विराजमान करवे कूँ ही पाटोत्सव कह्यो गयो है। या पाटोत्सव के बाद सातों घरन के प्रभु को पाट अपने अपने आचार्यन के माथें पधरायकर मनोरथ करवे को ही पाटोत्सव कहो गयो तथा उत्सव मानो हैं। जैसे फागण शुक्ला ७ मथुरेशजी को पाटोत्सव श्री विट्ठलवर का पाटोत्सव नहीं मानो पर वह पाट जेष्ठ कृष्ण ४ को विराजे। श्री द्वारकानाथ जी को पाटोत्सव अषाढ़ शुक्ला ५ का चन्द्रमाजी का माघ शुक्ला १२ या प्रकार अन्य घरन के पाटोत्सव हैं।

भावना—

पहले जो प्रथम। लीला नित्य है यहां प्रथम चन्द्रावलीजी के घर श्रीनाथजी फागण वद सातम को पधारे।ताही भाव सों श्री गुसाईंजी ने अवतार लीला करिके सेवा कीनी।

श्री गुसाईंजी स्वयं चन्द्रावलीजी स्वरूप हैं। तहां प्रभु अपने घर स्वयं कूँ जानि के पधारे। गुसाईंजी परदेस हुते भावात्मक सामग्री अरोगे विविध क्रीडा करी। यासों ही आज के दिन सों सब राग खुल जाय। युगल स्वरूप पधारें। यासों ही चारो यूथाधिपा सगरी सहचरीन के साथ चन्द्रावलीजी अपनी निकुञ्ज में पधराय भोग धरें। ताते सेव (पटिया) छाछि बड़ा मीठो शाक तिनकूडा अरोगे। अनसखड़ी में मेवाड़ी खरमण्डा खीर अरोगे और खीरन को प्रकार कह्यौ गयो है। आज ही सप्तमी के दिन श्रीनाथजी सतधरा क्यूँ पधारें। षट्धर्मयुत सातमें धर्मी सर्व लीला विशिष्ट इतने अर्थे। पुष्टि मार्गीय श्रीजी है

ऐश्वर्य—उत्सव में सामग्री अरोगे। यही ऐश्वर्य भयो।

वीर्य—यात्रा गमन में अनेक कौतुकी लीला भई। यह वीर्य भयो।

यश—या काल में सब दोषन को दावि के पुष्टि मार्ग द्वारा लीला प्रकट की। यह श्रीजी कोटीकन्दर्प लावण्य सुन्दर है। यह यश भयो।

श्री—भागवत स्वरूपात्मक साररूप के लिये पुष्टि पुरुषोत्तम सो भई। यही श्री भयो।

ज्ञान—जूठन सखडी, अनसखडी, प्रसादी अनप्रसादी को अचार, विचार युक्त ज्ञान-ज्ञान भयो।

वैराग्य—यह जो भगवत सेवा धर्म, जप तप द्वारा निरोध है सो वैराग्य भयो।

मन में सगरी सेवा की भावना करी और अनुभव भयो। यह सब लेके धर्म और धर्मी को रसानुभव ही सात प्रकार के भाव सों सप्तमी के दिन गोवर्धनधर पधारें।

आज देहली वन्दनमाल अभ्यंग हाँडी एवं शृंगार छोटो वस्त्र केशरी दुहेरा किनारी को घेरदार वागा पाग सादा चन्द्रिका मयूर पक्ष की आज कल्ला लूम की किलंगी धरवे लगे है। मोजा आज से वड़े होंय आज से समस्त राग चालू। आज से रतन चौका में चौपाई गवे। आज चोवा की चोली किनारी की धरें। मीना को पिरोजी आभरण। लूम तुर्री कर्णफूल फेट को पटका। ठाडे वस्त्र। सफेद यश के भाव सो स्वांग गवने आरम्भ। खेल भारी। खरमण्डा और खीर ही विशेष सामग्री अन्य घरन में उत्सव महोत्सव के रूप में माने।

सर्वत्र राजभोग में यह पद गवे। यह पद साक्षात् श्रीनाथजी के जतीपुरा से मथुरा पधारवे को वर्णन है। वह पद या प्रकार है—

राग आसावरी—या राग के भाव भी येही है कि श्रीनाथजी ने श्री गिरधरजी आदिन की आशावरी (आशा पूर्ण करी)।

मथुरा सतधरा पहुँचवे पर विविध मनोरथ किये। स्वाँग बनिके प्रभु को रिझाये। स्वाँगन को कारण देवतान की, गोवर्धन की, मनुष्यन की नकल करें। जासों बालक गोवर्धननाथ प्रसन्न होय किलकै और समस्त मनोरथ के विविध क्रीडा करें। याको वर्णन छीत स्वामी ने कियो है।

"विहरत सातों रूप धरै।"

वैशाख शुक्ला १४ तक आप सतधरा में विराजे और मंडली आदि अनेक लीलान में दर्शन दे जीव कृतार्थ किये। वि० १७२८ फागण कृष्णा ७ को भेद पाट में खैडा गाँव को नाथद्वारा निर्मित कराय पाट विराजे। श्री गोस्वामि तिलक दामोदरजी ने पधराये और हरिरायजी, गोविन्दजी, बालकृष्णजी काका वल्लभजी आदि ने वेदोपचार पूर्वक पाट बैठाये।

श्री गोवर्धन धरण को मन्दिर सिद्ध कराय।
विनय कीन गोविन्द सों रायसिंह हरसाय।
फागण कृष्णा सप्तमी मीन लग्न गोविन्द।
दामोदर कों अग्र करि पधराये ब्रजचन्द।
करि श्रृंगार उत्साह सों दामोदर हरसाय।
किय मनोर्थ गिरधरन को श्री गुबिन्द मन पाय।
दिगय पक्ष भू मुनि विषे श्री गोवर्धन धरण।
पाट स्थित ह्वै दास दिय दैवी जन मन हरण। (सं० कल्प०)

वि० १८६४ फागण कृष्णा ७ को पुनः घस्पार सों पधराये बाद पाट बिराजे। वह पाटोत्सव सर्वत्र मान्यो जाय। आज समस्त गोस्वामी बालक बहूजी बेटीजी छोटे-छोटे बालक भी श्रीनाथजी को होरी खिलावे। आज से उपंग बजे। स्वाँग बने। याको पदन में वर्णन है—

राग विलावल—

हो हो बोलत डोलत मोहन खेलत होरी।

आगे वणंन है—

बल को बल जो बिगोवे कोऊ बरज्यो न रह्योरी।
स्वाँग सबे जु बनावे पावे जान गहोरी।

निम्न पद आज के दिन गवे।

मंगला—हो हो होरी खेलन जैये। अम्यंग—खेलिये सुन्दर श्याम होरी। देखो देखो ब्रज की विधिन मनमोहन। श्रृंगार—आज माइ मोहन खेलत होरी। या गोकुल के चोहरे रंग राची ग्वालनी को वन्यो गोकुल गाम सुहावनो। राज सन्मु०—धन-धन नन्द जसोमति धन। ग्वालन सोधे भीनी अंगिया केशर। गुलाल उड़े जब लाल को रंगनरग मंगो कीजे। भोग—श्री गोकुल राजकुमार कमल। शयन—सकल कुँवर गोकुल के निकसे। पोढवे—चले भावते रस लेन।

आज से सभी राग गवें।

आज की दिन भर की सेवा श्री चन्द्रावलीजी की आडी सो होय है। आज से श्रृंगार से राजभोग पर्यन्त चितराम की पिछवाई धरें। ठंड पडे तो मोजा धरे। राजभोग सें उतर जाँय।

ललना तुम मेरे मन अति बसो सुन्दर चतुर सुजान ललना।

ग्वालन पर गिरधरी के लीला कही न जाय।
गोपालदास प्रभु लाल रंगीले हँसि लीनी उरलाय।

फागण कृष्णा ८—वस्त्र केसरी चाकदार वागा सूथन ठाडे वस्त्र मेघश्याम आभरण मीना के वनमाला को श्रृंगार पटका छोड़के सेहरा मीना को कुण्डल मीनाकृति हास लबल आज की सेवा कमलावतीजी की। मंगला—रंगीले छबीले नेना। श्रृंगार—नन्दराय लला व्रजराय। राज. स.—फाग खेलत व्रज सुन्दरी। राज०—गोकुल राजकुमार लाल रंग भीने। भो० आ०—गोकुल राजकुमार कमलदल लोचना। शयन—मिलजु डंडा रस खेलही।

फागण कृष्णा ९—ऐच्छिक श्रृंगार मुकुट भी धरें। छींट भी धरें। सादा दुमाला पागादि भी आज की सेवा श्यामाजी की।

मंगला—अनोखे खेलन आये होरी। श्रृंगार—मनमोहन ललना मन हर्यो। श्रृंगार सन्मुख—पीताम्बर कों काजर कहाँ लाग्यो। नन्दकुँवर खेलत राधा संग। एसो खेल होरी को जहाँ रहत नहीं कछु कान अब मुख मांडोरी।

आज मुकुट धरे। मनोरथ भयो गुलाल कुण्ड को।

भोग—(भोग आरती में) (सोरठ) हो किहि मिस पनघट जाऊ री। आर०—आज तो मोहन संग रंग भर होरी खेलोगी। शयन—हो हो होरी खेले लाडली व्रजराज। मुकुट धरे तो चोबा की चोली धरे। पीताम्बर आवे वनमाल श्रृंगार ठाडे पट स्वेत।

फागण कृष्णा १०—आज सों दस दिन तक श्री ललिताजी की सेवा

चन्द्रावलीजी के सेवा अन्तर आज सों दस दिन फाग लीला वैसे सात्विक जमुनाजी, राजस चन्द्रावलीजी, तामस ललिताजी, निर्गुण राधिका। होरी के दस दिन वैसे एक कालावच्छिन्न सब मिलिकै सब सेवा करें। प्रधानता चन्द्रावलीजी की। सेवा में आज सें ललिताजी की उपस्थिति। शृंगार भीमसाही तुर्रा दुमाला चाकदार वागा मध्य को शृंगार।

मंगला—हो हो होरी बोलत डोलत। शृंगार—कांकरीन मारो लँगर लागेगी। वन्दो मनसई नन्द की। राज०—खेलत वल मोहना। और भी पद गवे। भोग—प्रथम शीश चरणधर वन्दों श्री। आरती—छैल छबीलो ढोटा रस भर्यो। शयन—सकल सखी मिल श्री वल्लभ कुल मण्डन गाइये।

फागण कृष्णा ११—मुकुट धरें। वसन्ती काछनी, पीरी गुलाबी पटका ठाडे पट स्वेत सूथन पीरो वनमाला को शृंगार मुकुट मीना को। चोली चोवा की पिछवाई खण्ड कमलन की चितराम की बाद सादा सफेद। आज की सेवा श्री सौरभाजी करें।

मंगला—आज भोर नन्द पोर व्रज नारिन रोर मचाई। शृंगार में.—बन्द सुभनई नन्द के। शृंगार स०—पीताम्बर काजर कहां लाग्यो। रा०—छोड़ देहो यह बानि कमल नैन मनमोहना। नेक मुख माँढन देहु। मन मेरी इच्छा पूरी। ललना तुम मेरे मन अति बसो। माधो चाँचर खेल ही। डाडी माढ़ें तब—अब मुख माढोंगी वाह पाये। भोग—बहुरि डफ वाजन लागें हेरी। एरी सखी निकसे मोहनलाल। आरती—रंग नरंग न होरिया इत बने नव। शयन—एक दिशा बनी व्रजवाला एक दिश नन्द होरी के खेल बिच क्या कीना।

शयन में फूलन के आभरण धरें। श्याम घेरदार पट जब मुकुट धरे तब शृंगार में दूसरे वस्त्र धरें। काछनी बड़ी होय पटका बड़े होय।

फागण कृष्णा १२—वस्त्र कत्थई घेरदार हरे मीना के आभरण अबीर की चोली लूम तुर्रा कतरा छोटो शृंगार कटि को पटका ठाडे वस्त्र पीरे। आज को शृंगार रतिकलाजी को होय है।

मंगला—मन मेरे की इच्छा। शृंगार होते में—बदत नाहि ग्वालनी। शृंगार सन्मुख—वरसाने की नवल नार मिल। राज आरो—खेलो होरी फाग सबे मिल झूमक। राज सं०—ग्वालन सोधे भीनी अंगिया केसर भीनी सारी। भोग—मुरली अधर धरे नन्द नन्दन। आर०—तुम चलो सबे मिल जाय। शयन में—अरी चल नवल किशोरी भोरी होरी खेल। पौढवे—पौढे भामते रस एन।

आज की धमारें बड़ी भावपूर्ण होय। अबीर की चोली भावपूर्ण सोधें सों गवाई जाय। एक पद—(राग आसावरी)

बरसाने की नवल नारि मिल होरी खेलन आई।
बरवट धाय जाय यमुना तट घेरे कुँवर कन्हाई।
अति झीनी केसर रंग भीनी सारी सुरंग सुहाई।
कंचन बरन कंचुकी उपर झलकत जोवन झाँई।
केशर कस्तूरी मलि पागर भाजन भर-भर लाई।
अबीर गुलाल फेंट भरि भामिनी करत कनक पिचकाई।
उतते गोप सखा सब उमगे खेल मच्यो उदमाई।
बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मुरली मधुर बजाई।
खेलत खेलत रसिक सिरोमनि राधाजु निकट बुलाई।
रिषीकेश प्रभु रीझि श्यामघन वनमाला पहराई॥

यह रस भर्यो लीला को शृंगार रतिकलाजी की सेवाभाव सों होय।

फागण कृष्णा १३—शिवरात्री अथवा चौदस को होय तो आज सफेद घेर दार बागा पर लाल पाग, लाल पटका छोर कों कटि को घटै यदि कतरा या चन्द्रिका श्री मस्तक पर धरें तो वाके भाव की धमार होय शिवरात्री होय तो मुकुट धरें। काछनी चोली चोवा की। ठाडे पर स्वेत तामें वाघम्बर बन्यो भयो। मुकुट मीना को वनमाला को शृंगार होय। शिवरात्री के शृंगार की सेवा अधिकारिणी मन्मथमोदा जी, तथा लाल पाग पटका के शृंगार सेवा की अधिकारिणी रत्न प्रभा जी है।

शिवरात्री-फागण कृष्णा १३ या १४ की धमारें—

मंगला—आज माई खेलत मोहन होरी। शृंगार होते—राधा रसिक कुँवर मन मोहन। शृंगार सं—हो हो होरी खेले नवरंगी नन्दलाल। राजभोग—मेरो मन मोह्यो सांवरे। ओट में माला वोले पर—बाघम्बर ओढे साँवरो। रा. सम्मुख-ते लालन को मन हर्यो, मन मोहन मन हर्यो, नेक मुह माँढन देऊ, लालन ते मोहन मन हर्यो। भोग—एरी सखी निकसे मोहनलाल। आरती—खेलत हो हो होरी व्रज तरुणी सिन्धु। शयन—चली कुँवर राधे हो हो होरी खेलन।

फागण कृष्णा ३०—चोवा के वस्त्र ठाडे वस्त्र लाल सफेद मींना के आभरण पाग गोल चन्द्रिका। चोवा को घेरदार वागा सुनहरी किनारी के। छोटो शृंगार कटि को पटका। कर्णफूल। आज की सेवादि में हंसा जी की सेवा प्रधान है वैसे शृंगार पद के भाव सों एक ही होय है। साज सब सफेद।

मंगला—पीताम्बर काजर कहाँ लाग्यो। शृंगार होते—आज मोर नन्द पोर व्रजनारिन। राजभोग आये—ललना तुम मेरे मन अति बसो। रा. सन्मुख—कांकरी

कान्ह मोये मारें। श्याम रंगीली चूनरी। श्याम नख वेसर अति। गोपीलाल लड़ेती को झूमका। अरे कारे रतनारे भारे। अरे कारे कुम्हलाने। भोग—मानो ब्रजते करणी चली मदमाजी। आरती—मेरो मारग छोड़। शयन—बरसाने की की ग्वालनी खेलत फाग वसन्त। वेणुधरे—होरी के खेल बिच क्या कीता।

यामें कई धमारें सरस रस सों ओत प्रोत हैं जैसे—'मानो ब्रजते करिणी चली मदमाती' या में गोपी गज गामिनी गोपी एवं मदोन्मत्त हाथी को साम्य वर्णन कियो गयो है। नन्दलाल पै दौरी जाय आदि।

फागण शुक्ला १—वस्त्र वागा चाकदार सफेद मध्य को शृंगार पगा धरें या फेंटा धरों मीना के या सोने के आभूषण कर्ण फूल को शृंगार। नागफणी को कतरा या मोरशिखा वामा भाग कतरा ठाडे वस्त्र शोभते आज को शृंगार सेवा नृत्यकला जी की आडी सो होय है।

मंगला—परवा प्रथम। विलावल की। यही छेली तुक शृंगार में होय के पूरी होय। राजभोग—रिझवत रसिक किशोर ललना तुम मेरे मन। रा. स.—वरसाने की गोपी माँगत फगुवा। भोग—परिवा प्रथम गौरी की। यही पद संध्यार्ति भी होय। शयन में—परिवा प्रथम हो हो होरी खेले।

होरी के वाद्यन के नाम एवं भाव संयोग वियोगात्मक उभयलीलावेष्टित।

नाम	संयोग	वियोग
स्वामिनी जी	वीण	मुरली
राजस श्रुति रूपा	अमृत कुण्डली	मदनभेरी
तामस श्रुति	दुंदुभी	झालर
सात्विक श्रुति	निशान	झाँझ
सात्विक कुमारिका	नगारा	गिटगिट
राज ,,	शंख	पीनस
तामस ,,	घंटा	रबाब
नित्यसिद्धा तामस	मुखचंग	मृदंग
,, राजस	शृंग	सहनाई
,, सात्विक	खञ्जरी	महावर

फागण शुक्ला २—चन्दन की चोली। ठाडे वस्त्र। शोभते वस्त्र। चन्दन स्वेत की चोली।केसर मिश्रित। आभरण हरे मीना के या पिरोजी। मध्य कटि को पटका। छोटो कर्णफूल को शृंगार। गोल चन्द्रिका या कतरा। आज की शृंगार सेवा रसालिकाजी की आडी को।

मंगला—बरसाने की गोपी माँगत फगुवा। शृंगार—बरसाने की नवल नार। रा० आते—गोपी हौं नन्दराय घर। राज० स०—अहो पिया लाल लडेती को झूमका। होस नाय का खिलार। वृन्दावन चन्द ललना। भोग—कमल नैन के कौतुक सुनो सहेली। आरती—तुम चलो सबै मिलि जाय। शयन—लाल तेरी सुख की सौंझ सब लैहौं।

जमुनाजी विशाखा सामल सखी चम्पकलता भामजी कामासखी सुर मण्डल दुधारा सारंगी करताल तुरही किन्नरी

या प्रकार होरी के सब वाद्य एवं वस्तु लेकर महारस रूपा ये अलौकिक लीला करें हैं। और सब यूथ होरी खेलन पधारें। पद—

होरी के ख्याल विच ये क्या कीता।
मैणू लगाय छरी फूलों दी शिरदा घूंघट खोलने दीता।
पर्या गुलाल आँखों बिच मेरी देखन दा सुख छीता बे छीता।
सखी देखेंदी लाज मरोदी चुंवन गालो दीता बे दीता।
ऐसी न कीजो निगड नन्द दें कह लांदां ब्रज जनदा भीता।
रसिक प्रीतम नाल हा हा खांदी हौं हारी तू जीता बे जीता।

फाग शुक्ला ३—ग्वाल पगा किनारी को। सफेद चाकदार वागा। शृंगार मध्य को। कर्णफूल चार को। मीना के आभरण। आज की सेवा शृंगार श्री मधुराजी की आडी सों होय है।

मंगला—भोर भये नन्दलाल संग ग्वाल बाल। शृं० हो०—खेलत है बलि मोहना। राधा रसिक कुँवर मन सों। या गोकुल के चौहटे रंगराची ग्वाल। हो हो होरी बोले ग्वाल संग एक दिस। गोप कुँवर लिये संग हो। भोग—ए चलि जाँय जहाँ हरि खेलत गोपिन। आ०—ए चलि जाँय। शयन—आवे रावरे की ग्वालन। खेलत फाग राग रंग बाजे। अडाना में—धमार—

आवें रावल की नार ग्वार गोकुल में खेल।
सिथिल अंग लज्जित मनमोहन रंग रंग,
नयनन पीक लीक अरुचि अरु चिपकिये केल।
अंसन अबलम्ब पाँति प्रफुलित लपटत जात,
हसन दसन जुही ज्यों नर ही फेल।
पुलकित इत रोम पाति सोधे संग बगात,
केशर के रंग सिन्धु प्रेम लहर झेल।
सब वेश नव किशोरी मन्मथ मटक मोरी,
प्रीतम अनुराग फाग बाढी रंग रेल।

ब्रजपति रिझवार पाय अँचयो रस मन अघाय,
भौन गौन कजरा जहँ सगोल ।

पैल—

गोरे अंग गुवाली गोकुल गाम की ।
लहर लहर जोवन करे थहर थहर करे देह ।
धुकर पुकर छतिया करे वाको नये रसिया सों नेह ।
कुवटा को पानी भरे गोरी दिन दिन बिन नेवज लेय ।
घूंघट दाबे दांत सो ये गर्वन उतर देय ।
पहरे नौतन चूंनरी लावन लई सकोरी ।
भरग थरग सिर गागरी वह चितै चली मुख मोरी ।
चाल चले गज हंस की ऊँची नीची दीठ ।
ओढन के मिस मुरकिके नेक हरि ही दिखावे पीठ ।
ठमकि चले मुरि-मुरि हँसे गोपी फिर-फिर ठाड़ी होय ।
घायल सी घूमत फिरे याको मर्म न जाने कोय ।
तिलक बन्यो अंगीया बनी वाके पायल की झनकार ।
बड़े नगर ते नीकसी श्याम खरे दरबार ।

फागण शुक्ला ४—सफेद घेरदार केशरी पाग लटपटी पटका छोड को । मोर चन्द्रिका छोटो शृंगार ठाडे वस्त्र मेघश्याम लाल मीना के । आभूषण पिछवाई कमलन की चितराम की । राजभोग में सफेद । आज को शृंगार—सेवा भामाजी की आडी सौं होय ।

मंगला—नन्द कुँवर खेलत राधा संग जमुना पुलिन । शृंगार—तुम भले आये श्याम । खेलत मदन गुपाल फाग सुहावन । अरी चल बेग छवीली । मोहन खेलत होरी (सारंग में) । भोग—खेलत नन्द किशोर ब्रज में । आरती में भी यही गवे तथा शयन में—नायकी की धमारें गवें—खेलत लाल ललना संग ।

अधीरा नायिका—ब्रजपतिजी के भाव सों (राग सारंग)

अहो पिय मोसो ही खेलो हों खेलो तुम संग ।
जो कोऊ और खेलि है तुमसों करिहों तामें भंग ।
होंही आंजो तुमरे नैना जा नैन और यमार ।
तुम मेरे मुख मृगमद मांडो हों भेंटों अंकवार ।
तुम डफ लेहु आपने कर में हों गाऊंगी गार ।
कुकुंम रंग जो भरि-भरि छिरको रतन जटित पिचकार ।
तुम सों कहे देति फागुवा में हों आलिंगन लैहों ।
ब्रजपति आज आन बनिता कों ललन लागन देहों ।

दिये महावर गोरे पांयन ।
नगन जटित कंचन की जेहर सुमन वनी डोलत चायन ।
जंघ युगल कदली कटि केहरि रूप अनूप सुहावन ।
भुज मृणाल श्रीफल कठोर कुच जानत रस के दायन ।
खनकि बनी अंगिया जु खपन ते सीप भ्रूह चढ़ायन ।
मानो मैन खराद खरीदी वह पाइ उपमायन ।
गुलाल भर्यो तन ऐसो लागत मानो हेम कढयो तायन ।
सुधरराय प्रभु रीझयो वृषभान कुँवरि के भायन ।

फागण शुक्ला ५—बागा चाकदार चढ़ी आस्तीन के । वीर रस द्योतक । टिपारा श्रीमस्तक पैं । मयजोड मयूर पक्ष कों । चम्पकलताजी की आड़ी को शृंगार वनमाला को । कुण्डल आभरण मीना के ।

मंगला—निकस कुँवर खेलन चले । शृंगार—रंगीले छवीले नैना रस भरे । राज भो०—खेलो होरी फाग सबे मिल झूमक गावे । बन्दौं सुभनाइ नन्द के सन्मुख—सुरंगी होरी खेले सांवरो । भोग—मारू राग में—आज बनि ठनि खेलत फाग । आरती—अपने रंगीले ब्रज में खेलत फाग । शयन—ब्रजराज लडैतो गाइये । श्री गोवर्धनराय लला ।

(राग कल्याण)गोविन्दस्वामी की धमार—
श्री गोवर्धनराय लला—प्यारे तिहरि चंचल नेन विशाला ।
निहारे उर सोहे वनमाला—याते मोह रही व्रज वाला ।

याही धमार में प्रभु के गाल पैं स्वामिनीजी अरगजा लगाइ भाजि गईं । गोविन्द स्वामी कीर्तन करते बन्द है गये । गुसाईंजी ने पूछी—चुप क्यों है गये ? कहे धमारि भाजि गई । तब छेल्ली तुक श्री विट्ठलेश प्रभु ने पूरी करी । तब गुरु आज्ञा सों फिर गाई ।

फागण शुक्ला ६—आज से निर्गुण भक्तन की सेवा तथा श्री स्वामिनीजी की सेवा दस दिन तक चले । यामें समस्त पूर्वोक्त व्रज ललना मिलि के होरी खेले खिलावें । तथा अष्ट सखी भी सेवा शृंगार करें । आज को शृंगार सेवा श्री ललिताजी की है । वे अनुराग स्वरूपा हैं । तासों लाल पाग पटका धरें । तथा घेरदार स्वेत चन्द्रिका सादा । छोटो शृंगार ।

मंगला—खेलत मदन गुपाल फाग सुहावनो । शृंगार—हो हो होरी खेले नन्द को करि अम्बुज पकरि । राज०—कांकरी न मारो लँगर लागेगी । रितु वसंत के आगम आली प्रचुर मदन को । भयो मदन प्रचंड खेल वे हरि आये । भोग—

मेरो मारग छाँडो कमल दल लोचना। आरती में—अन्य पद भी गवें। शयन—होरी खेले लाल ललना संग। (राग जैत श्री)

रहसि घर समधन आई—ए सब जन के मन भाई।
नन्द गाम ते महर जसोदा—समधन नोत बुलाई।

फागण शुक्ला ७ (गो० चि० इन्द्रदमनजी को जन्म दिन)—शृंगार जन्म-दिन को निश्चय नहीं भयो। शृंगार तो होवे ही है। आज मुकुट भी धरें। यदि नवनीत लाल में बगीचा होय और तिथी क्षय होय तो ये शृंगार होलाष्टक के आरम्भ में भी होय। ये सेहरा को शृंगार है। सेहरा सोना को। वस्त्र कत्थई अधरंग चाकदार वागा किनारी के। दुमाला वनमाला को शृंगार। चोटी ठाडे पट सोभते। हास त्रवल आज जन्म दिन होयवें सों गुलाल कुण्ड भयो। आज की शृंगार सेवा सारी विशाखाजी की है।

मंगला—गोकुल राजकुमार लाल रंग भीने। शृंगार—मिल खेले फाग व्रज में श्री वल्लभवाला। खेलत फाग संग मिल दोऊ। नवल किशोर किशोरी जोरी। रा० सन्मुख—नन्द गाँव को पाण्डे। कमल पत्र होय तब। नन्द कुँवर को कुँवर कन्हैया होरी खेलत। भोग में—गोकुल राजकुमार कमल दल लोचना। आरती में अथवा सोरठ की भी होय। शयन—होरी को सुख अद्भुत मोपे बरन्यो न जाय। खेलन श्यामाजू चली गिरधर पिय पास।

आज मथुरेशजी को पाटोत्सव उनके यहां तथा सर्वत्र मानें। श्रीजी में कछू नहीं। गोस्वामी गोविन्दलालजी तिलकायत के द्वितीय कुमार चि० इन्द्रदमन बाबा को जन्मदिन सं० २००६ में।

होलाष्टक को आरम्भ— (फागण शुक्ला अष्टमी)

हरिरायजी की भावना—होलाष्टक में आज से गोविन्द स्वामी की गारी शयन में गवे। भारी खेल होय। ताको अभिप्राय है—जो एतन्मार्गीय भावना-नुसार यह होरी श्री स्वामिनीजी की होय है। हास्य रूपा अन्तरंग सखी एक हैं। वे स्वामिनीजी की आज्ञा पाय वसंत में काम कों जन्म देय हैं। वाही को स्वरूप ये होरी है। सबके भीतर काम प्रकट हैकर उन्मत बनावे सब रस रूपा है जांय। रात दिन अलौकिक लीला करें ताही सों होलाष्टक कह्यो। अष्टाङ्गते अथवा अष्ट सखीन सों रसदान करें। नित नूतन सामग्री अरोगें। भारी खेल होय। राजभोग में ग्वाल को डबरा गुलाल को उड़े।

मंगला में-मिलि खेले फाग बन में वल्लभ। शृंगार-नन्द गाँव को पाण्डे। शृं स०—भोर भये नन्दलाल संग लिये ग्वाल। निकसि कुँवर खेलन चले।

भोग—प्रथम सीस चरणन धरि। आरती में यही गवे। शयन में—गिरधर जमुना तट कुंजन में।

आज चाकदार वागा पै फेंटा धरें चन्द्रमा नौमी को देख शृंगार में सफेद वस्त्र पिछवाई खण्ड सहित। आज की सेवा चित्राजी की ओर से होय।

फागण शुक्ला ९—नवनीत प्रिय में बगीचा बैठक में बारहदरी में विराजें। श्रीजी में मुकुट धरें काछनी पीरी सूथन पीताम्बर चोवा की चोली। वनमाला को शृंगार। आज शयन में फूल के आभूषण धरें।

मंगला—आज भोर नन्द पोर व्रजनारिन रोर मचाई। देखो-देखो व्रज की विथिन। होरी खेले नन्द को नव रंगी लाल। राजभोग—माई मेरो मन मोह्यो साँवरे। छांड़ दो यहू वान प्यारे ललना। ललना तुम मेरे मन अति वसो। माधो चांचर खेल हीं। एरी सखी निकसे मोहनलाल। मांडोगी मुख घर में पाये लाल। बहुरि डफ वाजन लागे हेली। किहि मिस पनघट जाऊ री। बरसाने की ग्वालनी खेलत फाग वसन्ता। छड़ी धरे—होरी के खेल विच क्या कीता? आज को शृंगार चम्पकलताजी की आडी सो है।

मानो व्रज ते करणी चली मदमाती हों गिरधर राज पै जाय।
कुल अंकुश माने नहीं शृंखल वेद उड़ाय।
अवगाहे जमुना नदी करत तरुणी जल केलि।
छल सों छिरकत श्याम को—शुंड दंड भुज मेलि।
नाग बेल चरती फिरे मादक मध्य कपूर।
साख पटा श्रवण न चुवे—मंडित मांग सिंदूर।
कुच कुम्भ उर स्थल ऊभरे मुक्ता हार सुराय।
जनुयुग गिरिविच सुरसरी जुगल प्रवाह बहाय।
वृन्दावन विथिन फिरे केश कलाए जान।
अंचल पट बेरख उड़े घुघुरू घंट समान।
घूमत गल बहियाँ गहे लोक लाज तजि कान।
निकसत संक न मान ही प्राण एक पिय जान।
सन्मुख धाय हुलसि के कोक कलाहि निधान।
मानो महावत पोलिके देत सुरत सुख दान।
मानो कैरव को बनी धन दामिनी अनुहार।
कृष्ण सहित क्रीडा करें व्रजपति व्रज की नार।

वसन्त फाग धमार होरी की श्रीनाथजी की सेवा में कुछ विशेषताएं—

केवल चोवा चन्दन गुलाल अबीर सोही खेल होय। पहले चन्दन फिर गुलाल फिर अबीर फिर चोवा कारण प्रथम श्री स्वामिनीजी के रस रंग में रंगे फेर अनुराग बढ़े। प्रिया प्रीतम की रसलीला को वही गुलाल यश स्वरूप प्रसार होय। वही चन्द्रावलीजी तथा अनुराग स्वरूप ललिताजी के बाद सबन कों मिलाय के रस सों ओत-प्रोत होयवे वारी यमुना महाराणी कूं चोवा से। या प्रकार चार वस्तुन सों खेल होय। क्रीडा के पूर्व चरण ढाँके झारी बंटा गादी तकिया ढांकें। चरण ढाँकवे को तो वार्ता के आधार है। खेल में समानाधिकार होय तो आनन्द आवे। स्वामी सेवक अथवा परब्रह्म के चरण दर्शन की भावना बनि जाय तो क्रीडा रस में न्यूनता आवे। झारी बंटा जसोदादि ब्रज भक्त रूप हैं। लीला रस में मोहित होय जाँय—यासों ढाँके।

दोनों आडी छडी माला गेन्दुवा आवे सो श्री स्वामिनी जी ब्रज भक्तन के स्वरूप सों पधारें। खेल होय तब तक दर्शन दें। फेर टेरा आवे। निकुंज में पधारें। वहाँ भीतर सेवा लीला होय। खेल के बाद टेरा आवे। चरण उघडें तथा अन्य साज उठे। निकुन्ज लीलारम्भ होय जाय और राज भोग समै की सेवा सुरु होय। भीतर खेल को साज आवे। यामें विविध सामग्री मेवा, फल फूल मिठाई बहू, बेटी, सेवक वर्ग धरें।

वसन्त सों लेकै डोल गवे नहीं तब तक यानी फागण शुक्ला ११ तक प्रति दिन विट्ठलनाथ जी की अष्टपदी "हरिरिह ब्रज युवति" गाई जाय।

केवल राजभोग आरती में पुष्प वृष्टि होय। कारण या रस लीला को दर्शन कर देवगण पुष्प वष्टी करें। अथवा यमुना महाराणी आरती में पुष्पांजली अर्पित करें। क्योंकि उनके द्वारा ही रस दान प्राप्त होय।

वसन्त के दश दिन में पिचकारी नहीं आवे, न कटि में पोटली धरें। कारण वह पारस्परिक लीला नहीं, जमना जी की आडी सों स्वामी भाव सों खेल होय। पिचकारी चलानो पोटली फेंकनो यह पारस्परिक लीला है।

कीर्तनकार, बजायवे वारे मृदंगादि सब खडे खड़े बजावे। बैठक नहीं कारण प्रियाप्रीतम जब खेलें तब बिराजें नहीं और बिराजें नहीं तो सहचरी सखी कैसे बैठें। यासों सब खोलन में ठाड़े ठाड़े कीर्तन ठाड़े ठाड़े ही मृदंगादि बजें।

राजभोग आये पै एक पद धमार आरम्भ होय जो पालना की है। गुलाल उडे बाद सांहनी नहीं होय। कारण यह ब्रजलीला व्रज प्रान्त के भाव सों है। नन्दालय को भाव नहीं। यासों सोहनी नहीं होय। फागण के महीना में ही कपोल चित्रित होय, वसन्त में नहीं। वस्त्रन में पिछवाई में चन्दन सों तो आर्द्र करे वस्त्र

एवं पिछवाई तथा गुलाल की चिड़िया माँड़े। कारण यह कि निकुञ्जनायक निकुञ्ज लीला करें। निकुञ्जन में चिड़ियन की विशेषता होय है तथा श्रीस्वामिनी जी की सेवा की साधिकान में निकुञ्ज में चिड़िया ही हैं।

जगायबे में—"चिड़ियन की चहचहान सुनि जागी प्रात दुलही" "चिड़िया चहचहानी सुनि चकई की बानी" भोग में, खिलावे में—"आओ चिरैया आओ खुमरैया ग्वालन लेत बुलैया"। यासों आपको चिड़िया प्रिय हैं। आगे अबीर की होलाष्टक में चिड़ी माँडी जाय वरना बुन्दा, चोबा की टिपकी एवं लहर ही डारें। कारण श्री यमुना जी की सेवा में श्री श्यामसुन्दर रोम रोम में टिपकीवत् विराजमान हैं।

राजभोग भये बाद एवं शयन भये बाद समाज होय। वसन्त में न हैकर फागण में होय। कारण-ब्रज में होरी खेले बाद रात्री में साखी होंय। सो प्रभात में होरी खेलवे पधारें, होरी खेलते भये डोल तिवारी से हथिया पोल तक कीर्तन करते व्रज भक्त पधारें।

पद या भाव सों गवे—

काजर वारी गोरी गोरी ग्वार। था साँवरिया की लगवार॥
निश दिन रहत प्रेम रंग भीनी। हरि रसिया सों यारी कीनी॥
मदन गुपाल जान रिझवार। नाना विधि के करत सिंगार॥
मिलन काज रहे अंग अंगौछ। सरस सुगंधन तेल तिलौछ॥
अंजन नाही भरिवे दीये। श्याम रंग नैनन में पीये॥
गावतहू जसुमति गृह आवे। कृष्ण चरित उह गाय सुनावे॥
सुन्दर श्याम सुने ढिग आय। चितवत ही चित रह्यो लुभाय॥
कोऊ कहे काहू की न माने। अपने मन की गाय बखाने॥
राम रास प्रभु यों समुझावे। कहि भगवान कोऊ नीके गावे॥
लखि इन श्याम कहे निरधार। यह लगवारिन उह लगवार॥

फागण शुक्ला १०—आज से उत्सवाङ्ग भूत शृंगार सब घरन में एवं श्रीनाथ जी में टीकेत के शृंगार होंय। आज से आठ दिन तक नूतन वस्त्र, नूतन सामग्री अरोगें। भारी खेल होंय। गुलाल ग्वाल को डबरा पोटली से उड़े। श्रीजी की ठोड़ी रंगी जाय यह शृंगार अष्ट सखीन के भाव के होंय। आठ दिन पिछवाई खण्ड लाल। गुलाल सों अबीर की चिड़ियाँ मँड़ें। वस्त्र सफेद डोरिया के सुनहरी दुहेरा किनारी के चोली छड़ी वारी ठाड़े वस्त्र लाल वागा घेरदार कटि पटका। छोड़ को बादला

वारो। लूम की किलंगी छोटो शृंगार, कर्णफूल दो सादा। पाग खिडकी सुनहरी सारे दिन विशाखा जी की सेवा। जिनको श्री अंग या प्रकार है :—

सौदामिनी निचय चारु रुचि प्रतीकां
तारावली ललित कान्ति मनोज्ञ चेलां
श्री राधिके तब चरित्र गुणानुरूपां
सद्गन्ध चन्दनरतां विशिखां विशाखाम् ॥१॥

मंगला—सरस रस वर्ष्यो बरसाने। यह पद शृंगार खुले तब तक होय। **सन्मुख में**—तुक गायके पूरी होय। **राजभोग**—मोहन जु वृषभान के आसेजु। **राजभोग सरे तब**—आयोरी फागन मास बोले सब। **राजभोग सन्मुख**—तुम आवो री आवो मोहन जु बोले सब। होरी होरी खेले राधा गोरी। **भोग में**—गारी हरि देत दिवावत। आयोरी फागण मास बोले सब। **शयन**—अरी चल नवल किशोरी गोरी भोरी।

कुञ्ज एकादशी—

कुञ्ज एकादशी पै अभ्यंग होय ताको भाव यह आज सों चार दिना चार यूथाधिपान की सेवा होय। डोल गवे। पृथक् पृथक् डोल चार स्थानन में झुलावें। ये छः दिन डोल राजभोग एवं शयन सन्मुख में गवें। ताको भाव राजभोग एवं शयन भोग में निकुञ्ज लीला होय। तासो डोल हूँ छः स्थानन में झूलें। नन्दालय में। यमुनापुलिन में। नायक गिरिराज में, कुञ्ज में। यासो ही प्रथम श्री नवनीत प्रिय जी डोल के पूर्व केवल आज श्रीनाथ जी के गोदी में बिराजें।

बारह महीना में एकादशी को नाम कुञ्ज एकादशी पुष्टि मार्ग में माने है। आज से कुञ्ज लीलारम्भ है। श्रीनाथजी में बारह महीना में कुञ्ज आज ही बँधे। वह द्वादश वन २४ उपवन के भाव सूँ। केला के खम्भ आवें। राजभोग सरे वाद कुञ्ज बंधे तब यह पद गवे।

राग सारंग—

तैं मोहन को मन हर्यो और तो बिन रह्यो न जाय प्यारी।
कुञ्ज महल बैठे पिया नव पल्लव तल्प सबार प्यारी॥

कुञ्ज देहली वन्दनमाल अभ्यंग हांडी भारी मुकुट को शृंगार गाती को पटका वस्त्र केसरी श्याम। दो रंग की। काछनी, सूथन, पाग पटका छोड़ केसरी रूपहरी किनारी को, चोवा की चोली, मीना के आभरण पल्लव को फूल सहित। चौखटा मुकुट राजभोग सरे बाद फूल को। सायं भोग के समय फूल को मुकुट। राजभोग सरे बाद सम्पुट में श्री नवनीत पधारें, गोदी में विराजें। खेल युगल स्वरूपन को

सम्मिलित होय। आरती उतरे बाद प्रिया जी पधारे फेर उत्सवांग खेल को साज आवे। चोपड़ा गुलाबदानी आदि साज सज्जा आवें।

आरती में ठाड़ो वेत्र धरें। वंशी कटि पै। कारण व्रजभक्त झपट के वेणु चुराय लें। यासों कटि पै धरें। बेत्र ठाडो या लिये धरें कि इन व्रज भक्तन कों घेरि सकें। अथवा व्रज भक्त "बाँसन मार मचावहीं" आदि पदन के आधार पै सब होय।

मंगला—भोर भये नन्दलाल संग लिये रविजा तट कुञ्जन में खेलत देखो देखोरी व्रज की बिथिन। शृंगार सन्मुख—आ माई खेलत मोहन। राजभोग सरे पे कुञ्ज वडे जब। तें लालन को मन हर्यो। नवनीत पधारे तब—अरी चल वेग छवीली। आज सो राजभोग में अष्टपदी बन्द होय। खेल गवें। **राजभोग सन्मुख**—मदनगोपाल डोल झूलत। झूलत डोल नन्द किशोर। मोहन झूलत बाढ्यो आनन्द। अद्भुत डोल बनी।

आरती होय तब—

डोल झूलत प्यारो लाल बिहारी विहारिन। नवनीत पाछे पधारे तब—हरि को डोल देख व्रजवासी। **भोग में**—मदन मोहन गहवर वन खेलत। **आरती**—होहो वेन मध गावे। शयन आये पे गारी गवे। **शयन**—नवल कन्हाई प्यारे। डोल चन्दन को झूलत हलधर वीर। गिरधरन झुलावत डोल। डोल चन्दन को। अनवसर में भी डोल ही गवें। मान, पोढवे के पद नहीं होंय।

आज ही के दिन वि० १५४९ में आचार्य महाप्रभू को श्रीनाथजी आज्ञा किये। मैं गोवर्धनधर स्वरूप गोवर्धन में प्रकटित भयो हूँ। हरिदास वर्य गोवर्धन में मेरो मिलाप होयगो। आज श्री नवनीत प्रिय पधारे सो स्वामिनी भाव भावित लीला दर्शन हेतु। पाछे खेलिके पधारे। फेर घर में। कुञ्ज में विराजे। पुनः विना भोग के खेल होय शीतल अरोगें। निकुञ्जन में पधारे। बालक एवं प्रिया प्रीतम घूमवे ही पधारें। क्योंजी राजभोग में पधारवे को कारण—होरी को खेल कुञ्ज निकुञ्ज लीलान में मध्यान्ह में ही होय। मनोरथी होय तो फूल के आभरण भी धरें, तामें पाग घेरदार धरें। आभूषण सब फूलन के। शयन में भोग संग आवे।

ये आभूषण धरायके सखड़ी भोग या भाव सों आवे की आभूषण श्रीस्वामिनी जी स्वरूपा है। माला व्रज भक्त रूपा है। आज की सेवा श्री चम्पकलता जी के भाव की हैं।

फागण शुक्ला १२—शृंगार डोरिया के घेरदार सुनहरी किनारी के वसन्ती सफेद धरती पै। आभरण कटि पटका छोटो शृंगार। सादा पाग ठाड़े वस्त्र पीरे। खेल भारी। यह शृंगार जमनाजी के भाव को है।

मंगला—आज छबीलो लाल प्रात ही खेलन। शृंगार—सुन्दर श्याय सुजान। सन्मुख—गरे गुंजा शिर मोर परवौवा। ये छेल्ली तुक गवे। राज० आये पै—समध्याने ते ब्राह्मण आयो। राजभोग सरवे में—रहसि धर समधन आई। राजभोग सन्मुख—मदन गोपाल झूलत। अद्भुत डोल बनी। हंस सुता के कूल। डोल दोऊ अनुरागे। आज भाई झूलत है नन्द लाल। भोग में—तुम आवोरी आवो मोहन। आरती—होरी खेले गोरि गिरधर संग। शयन भोग आये पै—मनमोहन रसमत्त पियारे। सन्मुख शयन डोल—गिरधरन झुलावत बाल। डोल झूलत है नन्दलाल। हो हो राग रमरयो।

खेल भारी सारे वस्त्र पिछवाई सब लाल अबीर की चिड़िया चोवा की आवे। रहसि धर समधन आई। ये धमार को सम्पूर्ण अर्थ बुद्धी पक्ष एवं गणेश वर्णन में है। यामें प्रभु को नन्द यशोदा जू को तथा व्रषभानजू को वर्णन है। वैष्णव कैसे गारी दे सूकें। ये सब लोक दृष्टि सों कह्यौ। याको तात्पर्य सम्पूर्ण अलौकिक है।

फागण शुक्ला १३—वागा चाकदार सुनहरी किनारी को। नागफणी को कतरा। सफेद जामदानी को गुलाबी झांई वारो। मध्य को शृंगार। कर्णफूल चार मीना के आभरण। ठाड़े वस्त्र पीरे। शृंगार मध्य को।

मंगला—तू जिन बोलेरी देन दे वाय गारी। शृंगार—तुम आवोरी आवो मोहन जु को। सन्मुख शृंगार—तुम भले आये श्याम होरी खेलन। रा० आ० बरसाने ते नन्द गांव प्रोहित। रा० सरवे पै भी यही पद होय। राज० सन्मुख डोल—डोल झूलत है नन्द लाल। मदन गुपाल डोल झूलत।

श्रुति रूपा चन्द्रावलीजी की सेवा में याही भाव सों खेल होय। धमार गारी गवे। भोग में—युवती यूथ संग फाग खेलत। आरती में—हो हो हो होरी बोले गोरस कोरी मातो डोले। शयन अरोगवे में—गावत धमार आई व्रज की सुकुमार शयन सरवे पे—गावत राग रंग आवे रावरे की ग्वाल नार। शयन सन्मुख डोल—गिरधरन नवल नन्दलाला। गिरधरन झुलावत बाला।

गावत धमार आई व्रज की सुकुमार नार।
चित्र अंकित डफ सवार तृण टकोर अंगुरी ढार वजत रिझवार ग्वार।
मुरारिदास प्रभु गुपाल फगवा दीनो संभार दे अशीष उलट चली रूपमाधुरी बिहार॥

फागण शुक्ला १४—वस्त्र वागा घेरदार चंदन की बूटीन को फाग सादा मत्स्याकृति। कतरा। मध्य को शृंगार कर्ण फूल। ठाडे वस्त्र हरे या श्याम। तुङ्गविद्याजी की सेवा। खेल भारी चोपड़ा साज सिज्जा सब उत्सव अनुरूप। "छैल छबीलो ढोटा रस भर्यो। वाकी चितवन भोंह मरोर" के भाव सों मत्स्याकृति कतरा बारह महीना में आज ही धारण करें।

मंगला—हो हो होरी खेले लाल डफ बाजे ताल मृदंग। शृं० होते—भाई बरसाने ते नन्द गांव प्रोहित। शृं० सन्मु०—होरी को खिलारे भांवतो। मन मेरे की इच्छा। रा० आ० रहसि धर समधन आई। रा० स०—झूलत युग कमनीय किशोर। शोभा सकल शिरोमणि। झूलत बाढयो रंग। झूलत नवल किशोर। उत्थापन—आज ललना लाल खेलत बने। भोग—ढोटा दोऊ राय के खेलत डोलत। आरती—छैल छबीलो छोटा रस भर्यो। शयन—कछु दिन नियरे ही रहो हरि होरी। सन्मु—गिरधरन नवल नन्दलाल। हो हो हो रंग रमिरयो। झूलत राग रंग।

धनाश्री—मन मोहन की यार गोरी गूजरी।
सब व्रज के टोकत रहे याते निकसत घूँघट मार॥

.....

ज्यों ज्यों नर नारी सबे हिल मिल करत चबाय।
शिरोमनि प्रभु दोऊ मिले ताते भयो चो गुनाय।

फागण शुक्ला १५—होरी को उत्सव

हरिराय महाप्रभु की भावना को सार—यह होरी को बड़ो पर्व मानिकै श्री स्वामिनी जी श्री ठाकुरजी को अभ्यंग करावे नये वस्त्र धरावैं। नूतन शृंगार करैं। भोग में उड़द के छाछि बड़ा पाटिया तिनकूडा मे बाटी पूवा गुंजादि विविध सामग्री भोग धरैं। भारी खेल होय है। सबरे दिन व्रजभक्त संयुक्त खेल करावैं। परस्पर खेलैं। अमर्यादा वारी गारी गावैं। आज अमर्यादा को अंगीकार करि दिन भर मस्ती सों प्रभु संग सब व्रज भक्त घूमें। गली-गली घर पधार रंगन सों रंगमंगे है जाय हैं। पाछे शयन में डाढ़ी रंगी जाय। यष्टि (ठाडेवस्त्र) धरे। दान भाव सों लकुट धरैं। यष्टि ब्रह्मा सरूपा है ताकी वेद मर्यादा को आप उल्लंघन करि अपनी पुष्टि लीला व्रज में स्थापित करी है सो होरी के चार प्रहर दिन अरु रात चार यूथाधिपा नायिकाएँ सेवा करें। प्रिया प्रीतम गुलाल सों रंग मंगे होय है। विवाह लीला सों ग्रन्थी बंधन करावैं आदि।

राग विहाग—

चले पिय भाव ते रस लैन ।
खेल फाग अनुराग बढयो है महामत्त गति गैन ।
झीने बसन गुलाल संग बगे तन राजत दुति मैन ।
रसिक प्रीतम पिय प्यारी पोढ़े नव निकुञ्ज सुख सैन ।

श्रीजी में देहली बन्दनमाल अभ्यंग वस्त्र पिछवाई खण्ड सब सफेद पाग खिड़की की । ठाडे वस्त्र लाल बागा घेरदार सफेद मध्य को शृंगार । चन्द्रिका सादा कतरा वारी । किलंगी लूम आदि । कर्णफूल चार को शृंगार के होय । सब मीना के आभरण । आज के उत्सव की प्रधानता डाढी रंगनो । काजर आंजनो है । तथा होरी खेलनो सायं साखी गानो यासे ही शयन में "ढोटा दोऊ राय के" पद गवे तथा शयन में डाढ़ी रंगी जाय । गुलाल उड़े और सारी रसलीला के साथ—"कछु दिन नियरे ही रहो हरि होरी है" या धमार में धूल वंदन को संपूर्ण वर्णन होयके गायवे जांय ।

मंगला—हो हो होरी खेलन जैये । अभ्यंग—खेलिये सुन्दर लाल होरी । घोष नृपति सुत गाइये । पादुकाजी के अभ्यंग में—खेलिये सुन्दर लाल होरी । ये आधो ही गवे । शृंगार सन्मुख—होरी के रंगीले लाल गिरधर रंग मचायो । राजभोग आये पे—सुन्दर श्याम सुजान शिरोमणि । मनमोहन की यार गोरी गूजरी । राजभोग सन्मुख—मदन गुपाल झूलत डोल । अद्भुत डोल बनी । झूलत डोल दोऊ अनुरागे । हंस सुता के कूल । डोल झुलावत लाल विहारी । हरि को डोल देख व्रजवासी । भोग आरती में—कछु दिन नियरे ही रहो हरि होरी है । शयन तथा सन्मुख—ढोटा दोऊ राय के खेलत डोलत । डोल बीच में गुलाल सों ढाढीं रंगे । ठाडे पैत्र धरें । गुलाल उड़े । तब—सोंधे ढाढी लीपियो । गुलाल उड़े कोऊ भलो बुरो न माने । बाहर—गिरधरन नवल नन्दलाला । पौढवे में—राग नट ।

गोकुल सकल गुवालनी सब मिलि खेले फाग ।
तिनमें श्री राधा लाडली जाको परम सुहाग ।
झुंडन मिलि गावत चली झूमक नन्द केदार ।
आज परव मिलि खेले हम तुम नन्द कुमार । आदि-आदि ।

महा महोत्सव डोलोत्सव (चन्द्रावलीजी को प्रधानोत्सव)

श्री हरिरायजी की डोलोत्सव भावना—डोलोत्सव अत्यन्त गोपनीय लीला है । श्री वृषभानजी कीरतिजी श्री ठाकुरजी को न्योतो करैं अपने जमाई जी को बुलावैं और नाना प्रकार की सामग्री अरोगावे । फेर गुलाल अबीर छिरकैं याही

भाव सों श्री नवनीत श्रीजी की गोद में पधराय आरती करै भेट करै । पाछे नन्दालय में प्रभु पधारे । नन्दरायजी यशोदाजी अपने वात्सल्य रस सों और एक ओर निकुञ्ज भाव सों वृन्दावन श्री गोवर्धन की तरहटी जहां सदा सुन्दर झरना झरै, जहां सदा ही वसन्त रहे है तहां शीतल मन्द सुगन्ध त्रिविध पवन वहै है । अनेक वनस्पति माधुरी लता करी लता द्रुम वेली पुष्पयुक्त फल सों डोल बनै है । अपने पुत्र, अपने पति कूं पधराय प्रार्थना करै है । यह व्रज वृन्दावन गोवर्धन यमुना गोकुल सम्बन्धी जितनी लीला वस्तु है तिन सबन के भोक्ता आप हैं । आपही की आज्ञा सों ए सब पदार्थ अति अलौकिक हैं । ताते पुष्प फल अंगीकार किये । डोलोत्सव केमिस इन सबको अंगीकार किये । काहे ते जो वृक्षादि वनस्पति सो सब भगवदीय है और सब ठौर के है । याते आपको नाम हूं 'भक्त मनोरथ पूरकायनमः' ऐसे मनोरथ भगवदीयन को जान आप (१) श्री गोवर्धन पर डोल किये । (२) कुञ्जन में डोल किये । (३) गोकुल में डोल । (४) यमुना पुलिन में किये तासो ही तीन समय ही श्रीजी में डोल झूलै है ।

तहां शंका होय है । जो भगवदीय है उनकी श्री ठाकुरजी सों प्रार्थना है अपने सुख के लिए पूर्ण पुरुषोत्तम सों प्रार्थना करनो पुष्टिमार्गीय भगवदीय को लक्षण नाहि । अतः आप गिरिराज वृन्दावन वृक्ष आदि अपने आपस में अंगीकार करने हेतु प्रार्थना करी । याको उत्तर है—

व्रज भक्त व्रज संबन्धी भगवदीय लता वृक्ष बल्लरी जो प्रभु सुखार्थ सतत सेवा में तत्पर रहैं । गोपी जन पूर्ण पुरुषोत्तम को विविध प्रकार के वस्त्र आभूषण सामग्री अरोगावन केमिस सों प्रार्थना करी । ताते प्रभु सुख होय अपनो सुखतो दर्शन मात्र में है । व्रज वृन्दावन गोकुल गिरिराज के वृक्ष लता वल्लरी पुष्टि मार्गीय भगवदीय है । यासों ही हरिदास वर्य कहे गये । ये लीला रस उद्दीपन के भाव सों क्रीड़ा रस सम्बन्धी दोनों प्रकार की लीला दो भावन सों विशेष है । व्रज कीलीला आलम्बन रूप है । रस क्रीडा जितनी है वामें उद्दीपन विशेष है । याही सों गिरिराज ऊपर डोल उत्सव किये । तहां सन्देह होय । गोकुल में बाल लीला है । सो डोलोत्सव कैसे सम्भवे । तहाँ कहै हैं—प्रसिद्ध किशोर लीला—यही डोल है । ताते डोल की रचना केवल हास्य लीला है । जामें बलदेवजी तथा गोप बालकन के निकट में संभवे नहीं । ताते गोकुल में डोलोत्सव को प्रभाव कैसे ? गिरिराज में कैसे ? तातें कहै हैं जो डोल लीला परम रहस्य लीला है । हिंडोरा में हूं बलदेवजी कूं गोपन को छिपाय के लीला किये । अतः गोकुल में डोल या प्रकार है—

जशोदाजी अनेक मनोरथ वात्सल्य रस के डोल रचना करिके किये । सोरह हजार अग्नि कुमारिकान कों डोल सिद्ध करायो । व्रज सम्बन्धी स्वामिनीजी

चन्द्रावलीजी ललिताजी प्रभृतीन को बुलाय मुग्ध भावसों जशोदाजी कहैं तुम सब हिल मिलि के डोल रचना करो। तुमहू खूब खेलो। लालाए खिलाओ। ऐसो खेल खेलो जो मेरे लालन खेलत खेलत ऊब जाय। होरी लीला सों हू ऊब जाय। सब स्वामिनीजी चन्द्रावलीजी ललिताजी आदिन कूँ बड़ी प्रसन्नता भई। आज हमारे मन की भई जो होरी खेलवे में गोप सखा बलदेवजी गुरुजन आगे हमारे मनोरथ पूर्ण होंयगे। यह आज बड़ी बात भई हमारो मनोरथ सिद्ध भयो। तब सब सखियन ने मिलके माधुरी प्रभृति पल्लवन सों डोल सिद्ध कियो। कुञ्ज रचना करी। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में डोल झुलाये। फेर सबन ने समस्त व्रजललना व्रजवासी एवं व्रजराज श्री जशोदा श्री कीरती आदिन के संग खूब खेल मचायो।

राग सारंग—(आनन्द सम्मोहिता)

हा हा हो अबके मोसों खेलिये बहुरि न भरिहौं आँख।
जो तुमरे परतीत नाहिन जिय ललिता देहे साख।
जो अबके न खिलायो होय तो सबै हँसेगी मोय।
बाबा की सों पाँय लागत हों यह विनवत हों तोय।
अपने निकट सबन के देखत बोल लेहु इक बार।
कुंकुमदास श्री कण्ठ में हँसि मुख देहु उगार।
बहुत गुलाल उड़ाय सांवरे दिन करि लीजै सांझ।
आलिंगन देहु सांवरे कोऊ लखै न घुँघरू मांझ।
खेल फाग त्यौहार मानिये आज हमारे धाम।
मदन मान मर्दन करो पिय व्रजपति पूरन काम।

यह महा महोत्सव उत्सव कैसे ?

जा उत्सव में आठ दिन पूर्व से नौबत की बधाई बैठे। नित्य नूतन वस्त्र धरें। शृंगार नूतन होय। विविध प्रकार की नूतन सामग्री अरोगें। सबरो कार्यक्रम उत्सवाङ्ग की दृष्टि सूँ होय। दिन भर गुलाल अबीर चोवा चन्दनादि से खेलें। बीच-बीच में भोग और बीच-बीच में दो-दो चार-चार बीड़ा अरोगें। बीच-बीच में खेल होय। याके अलावा ४० दिन पूर्व झांझन की बधाई देहली वन्दनमाल १५ दिन पूर्व सों सामग्री सिद्ध होय तथा सेवा शृंगार भोग रागादि में अधिकता रहे। इन कारणन ते महामहोत्सव कह्यौ जाय।

डोलोत्सव में—देहली वन्दनमाल हांडी उत्सव क्रम वस्त्र सफेद घेरदार बागा पाग खिड़की की मोर चन्द्रिका वनमाला को शृंगार मीना मोती सोना के आभरण कर्णफूल चार लूम ठाडे वस्त्र। लाल पिछवाई खण्ड स्वेत। राजभोग सरे

बाद मन्दिर धुवै। फेर श्री नवनीत सम्पुट में पधारें। पधारते ही श्रीजी की गोद में विराजें। फेर सूक्ष्म खेल होय। भीतर ही बाहर दर्शन नहीं खुलें। आरती होय। पुनः पट बन्द होंय। डोल को अधिवासन होय। डोल में श्री नवनीत पधार भोग आवे। फेर समय भये भोग सरे बाद दर्शन खुलें। सन्मुख बीड़ा अरोगें फेर खेल होय। फेर आरती होय फेर धूप दीप होय। भोग आवे। ऐसे ही श्री नवनीत प्रियाजी में भी होय। छेल्लो भोग बाद श्रीजी की गोद में पुनः आये के बिराजें। फेर सामिल खेल होय। आरती होय। फेर गोस्वामि बालक खेले, सेवक खेलें। कीर्तनिया खेलें। फेर श्री नवनीत प्रिय सम्पुट में ही पधारें। यहाँ मन्दिर धुवे। इतने में ही उत्थापन के दर्शन मानें।

डोल के शृंगार में होयवे वारे पद :—

मंगला में—आज नन्दलाल मुखचन्द नेनन निरख परम मंगल भयो भवन मेरे। **शृंगार में**—आज बन्यो नवरंग पियारो री। व्रजवनिता। वन क्यों न निहारोरी। कहु चन्दन कहु वन्दन की छवि। अंग राग बहु भांत रयो फबि। **राजभोग में**—आज बने नवरंग छबीले। डगमगात पग अंग अंग ढीले। जावक पाग रंगी धों कैसे। जैसे करि कहि पिय तैसे। **उत्थापन**—लाल तन चूनरी किये ऐसे कोने भोरे रंग न रंगे। अंजन रेख लगी जु कपोलन जावक सावक दीये॥ **भोग के समय**—आज बनी नवरंग किशोरी। रसिक कुँवर गिरधर जु की जोरी। बिथुरी अलक वदन छवि थोरी। ललित लता मानो प्रेम झकोरी॥ **आरती**—यह छवि मोपे जात न वरणी। गोवर्धन के आस पास चहुँ फूल रही है अरणी। **शयन में**—श्याम लाल नीके बने। रगमंगे वागे अति रस पागे वचन कहत रस प्रेम सने।

फेर मंदिर धुवे गुलाल निकसे। श्रीनाथ जी प्रभु को गुलाल निकासिके दुग्गल खीनखाप कों धरें जडाऊ हीरा मोती के आभूषण, कर्णफूल लड़ एक श्री मस्तक पर कुल्हे धरें। बड़ी गुलाब की माला दुग्गल में आज ही धरें। गुलाल सर्वत्र सूं निकारे वाद उत्थापन भोग आवे। भोग आरती सामल होय। शयन भीतर होंय। शय्या मंदिर काच मंदिर निज मंदिर धुवे गुलाल सब ठिकाने से निकारें। नित्यक्रम अनवसर होय पौढें। दोनों घरन के कीर्तनिया डोलतिवारी में ही कीर्तन गावें। छेले जब नवनीत भीतर पधारें तब भीतर आप कीर्तन करें। खेल को साज आज शय्या मंदिर में ही आवे। कारण श्री स्वामिनी जी के अधिकार में आज प्रभु हैं तासों।

मंगला में—होहो होरी खेलन जैये, शृंगार—खेलिये सुन्दरलाल होरी।
शृंगार सन्मुख—होरी के रंगीले लाल।

आज ग्वाल राजभोग आये पै सरे। पर कोई कीर्तन न होय न बीन ही बजे राजभोग में जब नवनीत पधारें तब धनासरी की अलापचारी होय। और पधारें तब ये पद होंय। "अरी चलि बेग छवीली"। ये पद राजभोग आरती नवनीत गोदी में बिराजें तब तक होय। गोल देहली सें ही राजभोग होय आरती भये बाद डोल में बिराजें तब रतन चौक में ये पद गवें—घोषनृपति सुत गाइये। नन्द सुवन ब्रज भामतो।

दर्शन खुले तब—मदनगुपाल झूलत डोल। झूलत डोल नन्द किशोर। डोल दोऊ बने अनुरागे। अद्‌भुत डोल बनी। मोहन झूलत बाढ्यो अनन्द। आज माई झूलत है नन्द लाल।

दूसरे भोग आवे तब—गोपी हो नन्दराय घर माँगन फगुवा आई। बरसाने की गोपी माँगन फगुवा आई।

दर्शन खुले तब—दोऊ नवल किशोर झूलत। झूलत फूल भई अति भारी। डोल भाई झूलत है ब्रजनाथ। हंश सुता के कूल। झूलत नन्दकुमार डोल।

छेल्लो भोग आवे तब—तें लालन को मन हर्यो। माधव चाचर खेल ही। हो पिय लाल लडेती कोझूमका। सुरंगी होरी खेले साँवरो।

दर्शन खुले तब सन्मुख—डोल झुलावत लाल बिहारी। हरि को डोल देखं ब्रजवासी डोल। झूलत है पिय प्यारी। झूलत युग कमनीय किशोर। शोभा सकल शरोमणि। डोल झूलतप्यारो लाल बिहारी।

नवनीत श्रीजी की गोदी में पधार कें बिराजें तब खेल होय। समाज सब मणी कोठा में जाय। बैठ के गावें। "खेल फाग फूलि बैठे डहडहे नैन"

महाराज लोगन कूं खिलावें तब—"खेलत वसन्तवर विट्ठलेश" यासें ही कीर्तनियाँ मुखिया भीतरिया खेले तब गावें।

नवनीत पाछे पधारें तब—अनुरागे पागे रस भरे आवत।

याकी तीन तुक ही गवें और नवनीत मंदिर पधारें तब ये गवें—

"खेल फाग अनुराग बढ्यो युवती जन देत अशीष।"

भोग आरती सामिल होय। आरती भोग में तम्बूरा से अथवा वीणा से एक कीर्तनिया वीणकार ही गावे। तथा नवनीत पधारें सो ही झाँझें बन्द है जाय। "खेल फाग फूलि बैठे डहडहे।" शयन में "डोल चन्दन को झूलत हलधर वीर"।

टिप्पणी—गुलाल निकसे बाद पुनः गुलाल को स्पर्श करे तो छिवाय जाय। बांटवे वारो अलग रहे। कारण होरी सर्वमय त्यौहार है—या कारण।

डोल के पदन में विशिष्टता—

चत्रभुजदास—देव गन्धार

मोहन अद्‌भुत डोल बनी।

.....

चत्रभुज प्रभु गिरधरन लाल छवि कांये जात गनी।

कृष्णदास ललिता जी को झुलावो—

झूलत डोल दोऊ अनुरागे।

.....

कृष्णदास प्रभु की छवि निरखत रोम रोम रस पागें।

विशाखा जी (कुम्भनदास)—

मोहन झूलत वाढ्यो आनन्द।

एक ओर वृषभान नन्दनी एक ओर ब्रज चंद।

राग सोरठ ब्रजपति जी—

मेरे बोले बोलन बोलेरी ऐ उचोइ डोले।

पेंडो तक ठाडो रहे घूंघट हस खोले।

.....

निरख बधू विवस भई देह दशा भूली।

ब्रजपति के संग सुरत मदन डोल झूली।

कल्याणराय जी—(राग विहाग)

खेल फाग फूलि बैठे झूलत डोल डहडहे नागर नयन कमल।

.....

गहवर कुंजडोल तांबूल खाते को वर्णन :—

राग सारंग—

गहवर रस सघन निकुञ्ज छायांतर रोप्यो डोल नागर नागरि दोऊ प्रेम सों झूलें।

.....

यह सुख देख धीरज धरि कहे गोविन्द सुर नर मुनी मन की गति भूलें।

नन्ददास के डोल में वैशिष्ट्य—

डोल झुलावत सब ब्रज सुन्दरी झूलत मदन गोपाल।

गावत फाग धमार हरख भरि हलधर अरु सब ग्वाल।

.....

होरी फाग डोलोत्सव में नवरस की कल्पना—

शृंगार—(स्थाई भाव रति) परस्पर प्रीति सों युगल छवि डोल झूलें। परस्पर आलंबन उद्दीपन। दोऊ मिलि ब्रज भक्तन के आलंबन। श्याम सुन्दर श्याम वरण है, शृंगार को भी श्याम वर्ण है। "श्यामं हिरण्य परिधिं"।

वीर—(स्थाई भाव उत्साह) फागण मास में वीर रस प्रधान खेल है। दो दल में होरी हार जीत बदाबदी में उत्साह सो मूठी भरि भरि दोनों तरफ गुलाल अबीर झोलीन सों फेंके। श्रीजी, नवनीत डोलतिवारी में एवं मणिकोठा सों वीर रस के दर्शन होय।

करुण—(स्थाई भाव शोक) यह जा समै श्रीजी से डोल झूलि कै गोद में विराजे समस्त गोस्वामी बालक, बहू, बेटी, कीर्तनिया, सेवक खेल चुकें और नवनीत पुनः घर पधारें तब खेद को दृश्य उपस्थित है जाय और बारह महीना में फिर प्रभु शीघ्र पधारें। ऐसी खिन्नता भरी दृष्टि सों समस्त दर्शन करें। उत्सवान्त को अवसाद प्रसिद्ध है।

अद्भुत—(स्थाई भाव विस्मय) जब फागन के पदन में गारी गावें तथा बड़ेन के मुख सों जो वचन सुने तो अद्भुत रस होय। जैसे—

(१) "समधन कों हाथी को भावे आछो नीको पूरो।"

(२) "कछु दिन नियरेई रहो हरि होरी है यामें।"

"रथ रावक पावक सजे खरन भये असवार।
धूरधातु घट रंग भरे कटन यन्त्र हथियार।" आदि।

हास्य—(स्थाई भाव हँसी) चेष्टा अपसब्द उच्चारनो आदि। यहाँ विविध प्रकार के स्वांग बनानो। नराकृति को विकृत सजानो तथा अनूठी उक्ती से कहनो जामें हँसी आवे। तो प्रभु—

"मो तन लगि लागे नहीं री ताको मन ललचाय।
तब हँसि मेरी छाँह सों छाप चलत छुवाय।" आदि।

भयानक—(स्थाई भाव भय) अकस्मात् पकरिकै मुख रंग देनो, जल सों भिजोय देनो, परस्पर खेल में घूंघट में, नेत्रन में गुलाल आदि डार देनो भय उपजावै।

बीभत्स—कीचड़, अपवित्र जलादि को ग्रहण जुगुप्सादायक है।

रौद्र—(स्थाई भाव क्रोध) श्यामसुन्दर जब दूसरी ललनान के साथ खेलें तब स्वामिनीजी रुष्ट होंय—तब।

शान्त—(स्थाई भाव निर्वेद) जब श्रमित होयके डोल झूल के नवनीत श्रीजी की गोदी में बिराजें तब शान्त रस के दर्शन होंय। कल्याणरायजी के पद में—खेल फाग फूल बैठे झूलत डोल डहडहे नागर नैन कमल।

चौदह रस—

वन में पधारिके लीला किये। चतुर्विध पुरुषार्थ एवं दस रस मिलिकै चौदह रस भये। "एवं वृन्दावने श्रीमत्" यह धर्म भयो "क्वचित् गायन्ति" यह अर्थ भयो। "क्वचित् च कलहंसानां" यह काम भयो। "मेघ गम्भीरया वाचा" यह मोक्ष भयो। ये चार रस "एकायनोऽसौ द्विफलस्त्रिमूलश्चतूरस" या वाक्य सो ये चार भये। आगे "चकोर क्रोंच चक्राह्व" यहाँ से दस रस भये। चकोर शृंगार, क्रोंच वीर, चक्राह्व करुणा, भरद्वाज अद्भुत, बर्हि-हास्य, व्याघ्र सिंहयोः भयानक; कचित क्रीड़ा बीभत्स, नृत्यते, रौद्र क्वचित् पल्लव-शान्त; अपरे हत-भक्ति, ये चौदह रस वनलीला में बताए। अन्तरंग भक्तन कोंहूँ ये रस जताये।

अब शृंगार में चौदह रस वन सें पधारते भये अलक है—सो धर्म अर्थ काम मोक्ष ये स्थाई भाव स्वरूप भये। "तंगोरजच्छुरित कुन्तल" शोभा धाम रति को उत्पन्न करवे वारे—स्थाई भाव रूप। गोरज से व्याप्त तें जुगुप्सा भई। ये बीभत्स। मोर के पंखन को बांधिके मुकुट सिद्ध देख आश्चर्य अद्भुत भयो। वन्य प्रसून वन संबन्धी पुष्प है। मोर मुकुट के अग्र भाग में निर्मित ते वीर रस। उत्साह भयो। आगे बढ़वे की जिज्ञासा—फिर हू वन पधारेंगे यह भयानक रस भयो। प्रसून है—प्रकृष्टा सूना यत्र—तत्काल कुम्हलायें—ऐसे को धारण कहा करनो—यह हास्य। रुचिरेक्षण ऐसे सुन्दर नेत्र के दर्शन करन को वन में न जायो जाय ताते करुण। हास्य देखिके जो क्रोध भयो—हमतो तपि रही है—ये आप हँसि रहे हैं—यह रौद्र। वेणु क्वणन सुनिके प्रयत्न शैथिल्य भयो। सो निर्वेद है याने शान्त रस भयो। 'अनुगैरनुगीत कीर्ति" अनुचर करिके कीर्ति गाइ गई। ये अधि-

---

टिप्पणी—आचार्यन ने माधुर्य और वात्सल्य रस की उत्तम और अधम रस की परिभाषा बताई है। तथा सात्विक एवं तामस दो प्रकार माने है। इनमें कोमलता, सुन्दरता, सरसता ही प्रभु अंगीकार करें तथा और रस स्वीकृत नहीं। जैसे वीभत्स रौद्र भयानक अद्भुत करुण। शेष शृंगार, हास्य, वीर, शान्त ये चार रस अंगीकृत किये।

परन्तु भगवदीयन ने षड्रितु लीला में नवरस हू माने हैं। हरिराय महाप्रभ ने तो वन लीला में नौ रस स्थिर किये।

कार होयवे सों स्नेह भयो। वह भक्ति रस को स्थाई भाव भयो। या प्रकार चौदह रस सिद्ध भये।[1]

श्री हरिवंश सेवा क्रम में—भक्ति रस के पाँच तत्व रूप में पाँच रस माने हैं। शान्त दास्य सख्य वात्सल्य मधुर इन रसन के स्थाई भाव श्रीकृष्ण में रति राधाकृष्ण प्रेम ही है। आलम्बन राधाकृष्ण नायक नायिका के रूप में उद्दीपन वंशीरव उनकी लीला चेष्टा आदि।

कुनवारो—

ब्रज में कुनबारो—ब्रज में बरसानो नन्दगांव के मध्यवर्ति कुनवारो गांव है। तहाँ प्रभू के झूला को स्थान है। तहां कुण्ड है। ताके ऊपर श्याम तमाल को वृक्ष है तहाँ कुनवारो (कुटुम्ब द्वारा आहार) भक्तन ने अरोगायो। तासो कुनवारो कह्यो गयो। समस्त ब्रजभक्तन के साथ अरोगते कान्हर ग्वाल को दर्शन दिये।[2]

कृष्णावार ग्राम यातो कृष्णस्य कुण्डनिह।
गोपाय कृष्ण नाम्ने यच्छन्नि ज दर्शनं कृष्ण ॥१॥
गोपेन सह मृत्तिका कुण्डो बुभुजे। [व० दि० यात्रा ख०]

शब्दकोष में कुण्डी मृत्तिका के पात्र ओंडे कुआ जैसे पात्र को कहें। कुण्डीबारा, पंक्ति, कुण्डीवारा, कुंडवारा।

भावना—

प्रभुनन्द राजकुमार कों वृहत् सानू (वरसानो) में सुसराल भोजन को बुलावे। इकल्ले प्रभू पधारे। तब ब्रजललना जो लाडलीजी की अन्तरवर्ति सखियाँ अष्ट सखी चार यूथाधिपा षोडष गोपी सब अपनी अपनी ओर सूँ भोजन परोस के हास्य विनोद करें। यासे ही चौगुनो अठ गुनो सोलह गुनो कुण्डवारा अरोगे है। छप्पन भोग में सपरिवार अरोगवे पधरावे कुनवारा में अकले और यह हर समय जव सुन्दर वस्तु वनावे अरोगवे बुलावै है। हास्य विनोद सो समस्त ब्रज ललना आनन्द लेहैं।

पुष्टिमार्ग में कुंडवारा वल्लभ वंशज द्वारा ही क्यों होय ?

कुल (कुटुम्ब) को आहार—कुटुम्ब की ओर सूँ अपने प्रभु को उपरोक्त भाव सूँ अरोगानो। [वार्ता २५२] रामदास भीतरिया सों श्रीनाथजी आज्ञा किये

---

१. व० पु० प्र० पृ० २८३।
२. गोकुलनाथजी की ब्रज यात्रा पृ० ४२।

मेरे कुं भूख लगी है सो तुम जाय के गुसाईंजी से कहो अपने ही हाथ सों सेवा सामग्री सिद्ध करि शीघ्र लैके आवें।

श्रीनाथ जी की प्राकट्य वार्ता पृ० ३७—

"एक दिन श्रीजी गोपालदास कों आज्ञा किये जो हम अप्सरा कुण्ड ऊपर हैं। गुसाईं जी सो जायके कहियो। हम श्याम ढाक तरे हैं। तुम दही भात सिद्ध करि छाक लैकें बेगि पधारो। हमकू भूख लगी है। गोपालदास ने जायके विनती करी। आप गुसाईं जी अपरस में छाक सिद्ध करि श्याम ढाक पै पधारे। श्रीजी बलदेव जी सहित अरोगे।"

पुष्टिमार्ग में जितनी भी सेवा है वह संपूर्ण भगवदाज्ञा सूं होय है। सो गुसाईं जी के समय सूं प्रभु को कुनवारो अरोगानो चल्यो आवै। अन्नकूट को कुण्डवारा एवं नित्य उत्सव कुण्डवारा में तारतम्य—हर समय की सामग्री के नाम दही भात, सेव की खीर, सीरा, मठरी, सेव नग इनके ही चौगुने, अठगुने, सोलह गुने की पद्धति भई। प्रधानता में दही भात उपरोक्त आज्ञा सूं सीरा, खीर, मठरी, सेव, नग मधुर मिष्टान्न भगवान कूं प्रिय हैं, तासों।

कुनवारा की विधी—

देहली मंड़े। मंगलमय वस्त्र धरें सुसराल में पधारें तासों हलदी सों चौक माँड़ि के तापै मलरा जमाने आगे सीरा खीर की हाँडी मलरा पाछे पकवान सेव मठरी जेमने दिशि सखरी दही भात।[1] गोपी वल्लभ भोग के साथ अरोगें। धूपदीप तुलसी शंखोदक करि भोग धरते। इन दिन न होय—ग्यारस, बारस, अमावस, छठ, रविवार, मंगलवार, यह कुनवारा को सर्वाधिकार वल्लभ कुल को ही है। सामग्री आदि भी अपने घर सूं स्वामिनी भाव सूं अरोगावें के आप स्वयं अरोगें। ससुरार के प्रसाद को अधिकार नन्दालय के घर कूं नहीं।

अन्नकूट के कुण्डवारा में निम्नांकित कछू नहीं :—

सेव के नग, मठरी, सीरा कहूँ कहूँ आवे। हलदी को चौक नहीं। तथा सखरी खीर नहीं। ताको कारण गोवर्धन पर ग्वालबालन के साथ प्रसाद रूप सों अल्पाहार करें। पूजा प्रकार वारो नैवेद्य भी माने हैं।

सामग्री कुनवारा की भावना :—दहीभात चन्द्रावली जी, श्री विठ्ठलनाथ जी (गुसाईं जी) की आडी की सेवा—स्वेत चन्द्रस्वरूप सों। खीर स्वामिनी जी स्वरूपा रस मय वल्लभ प्रभु सीरा। ललिता जी आरक्त अनुराग स्वरूप दामोदरदास

---

१. वल्लभ पुष्टि प्रकाश।

जी मठरी सेव नग। ये व्रज भक्त नन्दकुमारिकान की आडी सों। कुनवारा में परोसें अरोगावें। अन्नकूट में ललिता एवं नन्दकुमारिकान की ही आडी सूं होय। कारण स्वामिनी एवं चन्द्रावली तो दर्शनाभिलाषिणी है। गिरिराज की सेवा के पदन में हू "देखो री हरि भोजन खात। ललिता कहत देखिहों राधा जो तेरे मन बात समात।" आगे पदन में "सिखवत मोहन नन्द को तुम पूजो गिरिराज।" या पद (हरिदास) में कुनवारान के मलरन की झाल वर्णित है। "धूप दीप बहु विध किये कुनवारे की झाल।"

अतः पकवान्न ही अन्नकूट के कुनवारा में अरागावें है। और हू कुनवारा की भावना है ये महारास रूप लीला है यामें यूथाधिपान के भाव सों चौगुनी अष्ट गुनी षोडस गुनी सामग्री होय है।

पुष्टिमार्ग में स्वरूप पुष्टि प्रकार की व्याख्या विचार—

[गोस्वामि बालक ही प्रभु पधरावें।] शंका—पुष्टिमार्ग में श्री विग्रह मूर्ति की स्थापना में न तो भू शुद्धि को विचार है न प्राण प्रतिष्ठा न शास्त्रीय विधी सूं चल अचल मूर्ति की यज्ञादि द्वारा शास्त्र समस्त प्रतिष्ठा होय। केवल आचार्य चरण स्पर्श करि दें। वाय पुष्टि स्वरूप या प्रभु कैसे मान लें?

समाधान—हमारे यहां मूर्ति नहीं। यहां तो एक मात्र पूर्ण पुरुषोत्तम को स्वरूप ही मानै। "आनन्द मात्र कर पाद मुखोदरादि।" सर्वमय स्वरूप के सर्वाङ्ग में प्रभु निहित मानिकै आचार्य गुरु वा भगवन्मूर्ति विग्रह, अथवा चित्रादि में अपने सत्व सूं चरण स्पर्श करि नेत्र सूं निरीक्षण करि देवत्व, ईश्वरत्व, प्रभुत्व स्थापित कर दें तथा गुरु कृपा से वह प्रभु भक्त कामना कल्पतरु भक्त वत्सल बनि लीला, दर्शन, सेबा को सुख दें। जीवन कों भावना भावित वह स्वरूप सानुभाव करावे। यह कैसे? ताको प्रमाण श्री भागवत में भगवदाज्ञा सूं।

नह्यम्भोऽनन्त पारस्य कर्मकाण्डस्य चोद्धव।
संक्षिप्तं वर्णयिष्यामि यथावदनुपूर्वशः॥
वैदिकैरतान्त्रिको मिश्र इतिमे त्रिविधो मखः।
त्रयाणामीप्सितेनैव विधिना मां समाचरेत्॥ (भाग. ११।२७ ६।७)

तथा—द्रव्येण भक्ति युक्तोचेत स्वगुरूं माममायया। (भाग. ११।२७।६)

उपरोक्त भगवदाज्ञा सूं यह स्पष्ट है कर्मकाण्ड से प्रभु विग्रह या युग में कठिन पड़े। आगे तीनन में वैदिकतान्त्रिक मिश्रित के रूप में इप्सित विधि से मेरी अर्चना करें। आगे द्रव्य भेंट दे के भक्तियुक्त अपने गुरु द्वारा (अमायया) दुर्भावना रहित है कै गरु आज्ञा सें पधराये अर्चा, सेवा पूजा करै।

आचार्य श्री हरिराय महाप्रभु 'ने स्वमार्गीय स्थापन प्रकार' में बाजार ते विग्रह लायकर कृष्ण भावना करिके यथा रुचि बाल किशोर, पौगण्ड कुमार अवस्था मानि कै पञ्चामृत स्नान कराय भाव सूं प्रार्थना करिकै स्वरक्षा मिससें अपने आचार्य से संश्रित सेव्य की सेवा करे। तिन्हें पुष्ट करावे अथवा प्रभु में स्वकीय भाव स्थापित करावे। तभी प्रभु में अपनो बिम्ब प्रतिष्ठित होय।

आचार्य महाप्रभु के सेवा के सब स्वरूप स्वयंभू, स्वयं प्रमाण अप्राकृत स्वयं ही दर्शन दे जीवनकूं कृतार्थ किये। अतः प्राण प्रतिष्ठादि की इन दिव्य भगवत् विग्रहन कूं आवश्यकता नहीं मानी। श्रीनाथ जी गिरिराज से, नवनीत, गोकुल चन्द्रमाजी यमुना से, द्वारकानाथ जी सरोवर से, गोकुलनाथ जी आचार्यश्री की ससुराल सें, मदनमोहनजी विष्णु चित् संन्यासी से, विट्ठलवर चरणाट में संन्यासी से तथा अन्य विग्रह श्री जमना जी दामोदर कुण्डादि से ही प्राप्त भये। अतः सभी सेव्य स्वयं भूस्वरूप वारे हैं। अतः गो० श्री विट्ठलनाथ जी ने सेवा मार्ग चलायो। या सेवा मार्ग में गुरु की आज्ञा प्रधान है। श्रीमद् भागवत में आयो है—

आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत् कर्हिचित्।
न मर्त्य बुद्ध्यासूयेत सर्व देवमयोगुरुः॥ ११—१७—२७॥

भगवान तो कर्तुमकर्तुं अन्यथा कर्तुं सब समर्थ है। भगवान् जामें अपनी सत्ता धरें वही भक्त कामना कल्पतरु बन जाय और फल दाता है जाय। परे की वार्ता में आयो है—चरणन ते उछलि कै एक कंकर श्री गुसाईं जी की ठोकर को प्रभु स्वरूप बनिके श्रद्धा वारे भक्त कूं कृतार्थ कियो। भक्त प्रह्लाद के लिये नृसिंह बने। स्तम्भ ते प्रगट भये। भगवान कृष्ण अयोनिज अजन्मा है। फिरहू देवतान ने गर्भ स्तुति कीनी। देवकी जी ने अपने तेज सूं जगती को अन्धकार दूर कियो।

दीक्षा प्रकार :—नाद से, दर्शन से, स्पर्श से, दीक्षा को विधान है :—

ततो जगन्मङ्गलमच्युतांशं समाहितं सूर सुतेन देवी। भाग १०।३

अर्थात्—अथ वेद दीक्षा लक्षणं—तत्र स्पर्श दीक्षा, दृग दीक्षा, वेध दीक्षेति दीक्षा त्रैविध्यम्। तदुक्तं कुलार्णव तंत्रे—यथा पक्षी स्वपक्षाभ्यां शिशून संवर्धयेच्छनैः स्पर्शदीक्षोपदेशश्च तादृशः कथितः प्रिये। दृगदीक्षा—दृष्टिदीक्षोपदेशश्च तादृश कथितः प्रिये। स्वापत्यानि यथा मत्स्यो वीक्षेणेनैव पोषयति। यथा कूर्मो स्वतनयान् ध्यानमात्रेण पोषयति॥ वेध दीक्षोपदेशश्च तादृश कथितः प्रिये॥ या प्रकार सूं पुष्टिमार्गीयाचार्य अपनो सत्व दृगदीक्षा ध्यान दीक्षा सें वा स्वरूप में पधराय

सेवा को अधिकार देहैं। याही कारण से समस्त पुष्टिमार्ग
धर श्रीनाथ जी में से प्रादुर्भूत मानिके सबन कों
पधरावें। लौकिक में विवाहादि में प्रथम दर्शन को ही मुख्य वर
केवल एक वेद मंत्र सों सुपारी में देवता को आवाहन करि वामें देवत्व क
र्भाव है जाय। परन्तु देवतान की अवधि गणितानन्द तक ही है किन्तु
स्वरूप पूर्णपुरुष पुरुषोत्तम है। अतः सर्वाङ्ग भूत प्रभु मंगलमय रस दान करिके
सदा बिराजें। या कारण आचार्यगण भगवच्चरण के स्पर्श दर्शन सों प्रतिष्ठा
करें। यही पुष्टि प्रभु पुष्ट मर्यादा अद्यावधि प्रचलित है। जैसे शालग्रामजी,
नर्मदेश्वर महादेव, गोमतीचक्र, आदि की प्राण प्रतिष्ठा नही होय। ऐसे ही श्री
गिरिराज की प्राण प्रतिष्ठा नहीं होय। समस्त पुष्टिमार्गीय स्वरूप गिरिराज
सम्मत मानि कै सेवनीय भजनीय है।

दुतिया पाट को उत्सव

यह उत्सव डोलोत्सव के दूसरे दिन ही होय है। या में देहली वन्दनमाल फूल मण्डनी, भारी वनमाला को शृंगार कुल्हे जोड़ चमकने हीरा पन्ना माणक मोती के उत्सव के आभरण वनमाला को शृंगार कुण्डलादि समस्त आभूषण जड़ाऊ। चालीस दिन बाद जड़ाऊ शृंगार सोना के जड़ाऊ साज गादी तकिया लाल बस्त्र लाल जरी के सूथन वागा चाकदार ठाडे वस्त्र नीले पिछवाई खण्ड जरी की चोपकार की। ग्वाल तक पिछवाई दर्शन होय। फेर चैती गुलाब की मण्डनी आवे। तिवारी गुमट वारी छज्जा छत वगैरे। सन्मुख पाट आवे। कारण जब जब चैती गुलाब की मण्डनी होय तब तब पाट आवै। चोकी झारी गेन्दुवा ये सब पाट में आवैं। राजभोग से सन्ध्यार्ति तक मण्डनी रहे। अभ्यंग होय, भोग आरती सामिल होंय। मंदिर की सारी वस्तु रंगीन आवे। चन्दोवा टेरा गादी वस्त्र झंवुवा शैय्या जी आदि सब आज से राजभोग आते में गोपाष्टमी तक छाक के पद गवें। आज से चालीस दिन कुञ्ज लीला रमल। आज से ३० दिन तक तारु के वस्त्र धरें। पाट आयवे को अर्थ ही पाट बैठनो है। खेलादि होय।

दुतिया पाट को भाव—वसन्त सों लेकर डोलोत्सव तक प्रभु के संग समस्त ब्रज भक्त उद्दाम उच्छृंखल अमर्यादित खेल खेलें। ब्रजराज कुमार कूँ प्रभु न मानि के अपने समीपस्थ अपने समान प्रभु को मानि झकझोरी करे। ईश्वर भाव स्वामी भाव कूँ खोय के खेल होय यासों पुनः पाट बैठाय पूर्ववत् मर्यादा मानि नन्दराज कुमार को नित्यलीला उत्सव लीला में पुनः परिणत करें। याको ही पाट बैठानो पाटोत्सव कह्यौ। आज से वैशाख शुक्ला ६ तक मेवा भात अरोगें।

राघवदास जी की धमार में पाट बैठायवे को वर्णन—

ए चलि जाय जहाँ हरि खेलत गोपिन संगा।
.....
बैठे कनक, सिंहासन वलि बलि राघवदास।

गोविन्द स्वामी की वाणी में दुतिया पाट सिंहासन वर्णन —

परिवा सकल घोखन भानु सुता चले न्हान।
..... ।

परमानन्दजी का द्वितीया पाट वर्णन फूल मण्डनी में—

लाल नेक देखिये भवन हमारो।
द्वितीया पाट सिंहासन बैठे अविचल राज तुम्हारो।

यह श्री चन्द्रावलीजी की आडी को प्रधान उत्सव है। फूल मण्डनी भी चन्द्रावलीजी की आडी की होय है। कुञ्ज दस दिन; निकुञ्ज दस दिन; निविड निभृत निकुञ्ज दस दिन। या प्रकार ४० दिन कुञ्ज लीला भई। कुञ्ज जमनाजी निकुञ्ज ललिताजी निविड निकुञ्ज चन्द्रावली निभृत निकुञ्ज स्वामिनीजी। या प्रकार निकुञ्ज लीला समाप्ति के ही साथ वल्लभ महाप्रभू को प्राकट्य भयो। या सेवाक्रम को भाव या प्रकार है :—

कुञ्जलीला—ये वनन के वर्णन के साथ माने हैं। इन निकुञ्ज को श्री कृष्ण बलदेव स्वामिनीजी चन्द्रावली ललितादिन की राज्य सीमान में वन माने हैं। ब्रज के राज्य के विस्तार एवं समूह के अधीश्वर होयवे सों नन्द बाबा ब्रज राज कहे गये।

ब्रज को उल्लेख

यमुनाजी के दक्षिण तट के वनसमूह तथा वट समूह। ये श्रीकृष्ण को राज्य है।

यमुनाजी के उत्तर तट के वन समूह तथा वट समूह। ये बलदेवजी को राज्य है।

अन्य समूह वनन के तथा वट के समूहन में सब ही श्री राधाराणी स्वामिनी के राज्याधिकार में हैं। ४० वन सखीन सहित माने गये हैं।

सखीन के नाम ठाम या प्रकार हैं—

राधाजी को राज्याधिकार—वृहत् सानू (व्रषभानपुर) संकेत वट, नन्दगाँव, राधाकुण्ड, गोवर्धन, गोपालपुर, अप्सरा वन, नारद वन, सुरभी वन, पांडर वन, डिंडिभ वन। (बृ० गोमती सं०)

(१) **ललिताजी को राज्याधिकार गाँव वट वन**—ललित गांव, ऊँचो गाँव, गुर्जरपुर, करहला, स्वर्णपुर नन्दनवन, अक्षिपनवन, कामना वन, कर्णवन, काम्यवन, रंकपुर, अंजनपुर, भाण्डीर वट। ये श्री ललिताजी के। (नार० पु०)

(२) **विशाखाजी को राज्याधिकार**—त्रिवत्सपुर, पिपायसा, चात्रकवन कपि वन विहसवन, जोवन वन, आहूत वन, वंशीवट, विशाखाजी के।

(३) **चम्पक लताजी के राज्याधिकार**—मथुरामण्डल, कृष्ण स्थिती वन, गढवन, गोकुल कृष्ण धाम, बलदेव स्थल, चम्पक वट। ये ललिताजी के।

(संयो० तंत्र)

(४) **तुंगविद्याजी के स्थान**—जाव वट, सारिकावन, विद्रुम वन, पुष्पवन, जाती वन, मनोरथवट, आशावट श्री तुङ्ग विद्याजी के।

(भवि० पु० लक्ष्मी नारा० सं०)

(५) **रंगदेवीजी को राज्याधिकार**—चम्पावन, नागवन, तारावन, सूर्य ताप वन, वकुलवन, अशोकवट, केलिवट।

(६) **इन्दुलेखाजी को राज्याधिकार**—पात्रवन, पितृवन, विहारवन, विचित्र वन, तिस्करणीय वन, हास्यवन, रुद्र वट। देहली वन्दनमाल

(७) **सुदेवीजी को राज्याधिकार**—जन्हुवन, पहाड़वन श्रीधर वट।

(बृह पाराशर)

(८) **चन्द्रावली जी को राज्याधिकार**—कुमुद वन, चन्द्रावली वन, महा वन, कोकिलावन, तालवन, लोहवन, भाँडीर वन, छत्रवन, खदिरवन, शोभावन।

(९) **चित्रलेखाजी के राज्याधिकार**—तिलक वन, दीपक वन, श्राद्धवन, षट्पद वन, त्रिभुवन वन ब्रह्मवट। इन वनन में कुञ्ज निकुञ्ज है। वटन में निविड निभृत कुञ्ज माने है। जैसे वंशीवट निधुवन ऐसे ही प्रत्येक सखी के वट वन है। ये अष्ट सखीन के राज्याधिकार स्थल हैं। गो० बालक व्रज चौरासी कोस की यात्रा करे हैं परिक्रमा करें। इन सबन के हेर फेर में १२६ वन हैं। उनमें ३७ बन लुप्त है गये। कछुन के नाम परिवर्तित हैकर गामन के नाम भये। परन्तु येन केन प्रकारेण स्थिति सबकी है।

इनके अतिरिक्त उपपुराणन में ब्रजमण्डल कों भगवत् स्वरूप मानि मथुरा कूँ हृदय मान्यो है। ब्रज के ५५ वन भगवद् अंग स्वरूप हैं।

मथुरा हृदय। मधुवन नाभी। कुमुद वन ताल वन स्तन। वृन्दावन भाल। बहुला वन महावन दोनों श्रीहस्त। खदिर वन भद्र वन स्कंन्ध। छत्र वन लोहवन दोनों नेत्र। बिल्व वन रुद्र वन दोनों कर्ण। कामवन चिबुक। त्रिवेणी ...

उल्टो सीधो न कछु हृडबडाहट। ये मार्ग निगुर्ण भक्ति वारे प्रेम लक्षणा भक्ति को है। तासों गोवर्धन पूजा के चौक में आयवे वारे नवधा भक्तिन की पार करिके आवें। तब या सीधे प्रेम मार्ग सों प्रभु मिले हैं। तासों या द्वार नाम प्रेम मार्ग (प्रीतम पोली) कह्यो गयो। गोविन्द स्वामि हू गाये है—

प्रीतम प्रीति ही सो पंये।
यद्यपि रूप गुण सील सुधरता इन बातन न रिझैये।

ताके आगे सिद्ध कुंज है। यह निज मन्दिर को द्वार है। प्रेम लक्षणा भये बाद सबरे कारज सिद्ध है। सिद्ध मार्ग द्वारा प्रभु कूं पाय सकें। यासों या द्वार को नाम तथा कुंज को नाम सिद्ध कुंज राख्यो है। या में हू निभृत नि लीलानुभव होय है। सिद्ध भये बाद पुष्टि मार्ग में जो सेवा मिले ताको व कृष्णदास करै है :—

पोढे माई मंदन मा। ।
अनन्य होय चरणारविन्द भज सकल पूरण काम॥

ताके आगे लक्ष्मी कुंज है। यह द्वार प्रदच्छिना को है। यामें से ही कृ भण्डार यामें से ही स्वामिनी जी लक्ष्मी जी की बैठक, महाप्रभू जी की गादी आ कूं आवे हैं ताते याको नाम लक्ष्मी कुंज है कोऊ यह पूछे सिद्ध कुंज द्वार के बा लक्ष्मी कुंज कायको है—तो समाधान है।

"नमामि हृदये शेषे लीला क्षीराब्धिशायिनम्।
लक्ष्मी सहस्त्र लीलाभि: सेव्यमानं कलानिधिम्॥"

अर्थात पौढ़वे बाद चरणारविन्दादि की सेवा की अंगभूता लक्ष्मी प्रिय वल्लभ है। लीला रूपी क्षीर सागर में पौढे है। यासों छेली लक्ष्मी कुंज है। ताके आगे ए एक कुञ्ज और है ताको नाम है—**तुलसी कुञ्ज**—ये कुंज द्वार कीर्तनयागली व द्वार है। यामें पूर्व में तुलसी क्यारो हुतो। हरि प्रिया जी हैं वे राग रागनी के कोलाहल सों सेवा करें। ताते याको नाम तुलसी कुंज तुलसी द्वार है।

या प्रकार श्रीनाथजी के लाड लडायवे वारे महाप्रभू हरिरायजी ने द्वादश निकुञ्ज नायक श्रीजी के मन्दिर में निकुञ्ज भावना कीनी। पञ्चम घर के द्वारकेशजी हू ने श्रीनाथजी के वर्णन में 'निकुञ्जनायक' या पद के आधार पै :—

देख्योरी में श्याम सरूप।
वाम भुजा ऊँची करे गिरधर दक्षिण कटि धरत अनूप।
मुष्टिका बाँध अंगुष्ठ दिखावत सन्मुख दृष्टी सुहाई॥
चरन कमल जुगल सम धरिके कुञ्ज द्वार मन लाई।

...मन वचन अगोचर चरन कमल चित दीजे ॥

श्रीनाथजी पीठिका भाव—

हरिरायजी ने श्री प्रभु पीठिका की शैय्यां मंदिर कूं कुंज बताई है । ताके कछु भाव गोपेश्वर जी ने हू या पीठिका के प्रकट किये हैं । कछु चिन्हन के वर्णन हरिरायजी के भाव सों :—

पीठिका चौरस है । वाम वृन्दावनस्थ चौरस शैय्या मन्दिर है । तामें ऊपर शुक है । सों स्वामिनीजी के भाव सों है । नीचे मयूर द्वय हैं । एक स्वामिनीजी के नृत्य के भाव सूं व प्रियाप्रीतम भाव सूं । दूसरो मयूर मोरनी है । स्वामिनीजी नृत्य करें तब चतुर चन्द्रावली हैं सो दक्षिण दिशा सों रसदान करें । तथा वचनन सों खण्डिता मानादि भाव प्रकट करें । मणिधर [illegible] के निकट दीपक ज्योति प्रकाश करे और मुख बाहिर किये गैया हैं [illegible] लावें हैं । कुण्डली वारे सर्प है सो प्रभु एवं स्वामिनीजी की इच्छा मानि गिरिराज की कन्दरा में लीला हेतु लै चले है । नृसिंह द्वार पर सिंह है वे अनधिकारी कूं भीतर प्रवेश नहीं दें । वाम भाग में दो मुनी हैं वे कुमारिकायें हैं । एक श्रुति रूपा ललिताजी है जो मेष जैसो है वह मेष नहीं "मेधातिथेर्मेघ इन्द्र" या श्रुति के आधार सो अर्थज्ञानी इन्द्र है । तीन मुनी चन्द्रावली जमुना, ललिता हैं ।

या प्रकार चालीस दिन कुञ्ज निकुञ्ज निभृत निकुञ्ज लीला है । श्री चन्द्रावलीजी को सेवा प्रकार चैत्र शुक्ला १५ कूं सम्पन्न होयके आगे द्वितीया पाट ।

चैत्र कृष्णा ३—शृंगार वस्त्र ऐच्छिक [illegible] हांतास धरें । एक दो दिन छोटे शृंगार फेर बड़े शृंगार होय । या दिन की सेवाधिकारिणी श्री चन्द्रभागाजी है ।

चैत्र कृष्णा ४—शृंगार ऐच्छिक । सेवा रस साधिका श्री चित्रलेखाजी है ।

चैत्र कृष्णा ५ (रंग पंचमी)—आज की सेवा श्री पद्माजी की है । आज रंग पञ्चमी कही जाय । श्री प्रभु मुकुट धरें तथा लाल गुलाबी तास के वस्त्र काछनी धरें । आभरणादि ऐच्छिक तथा ठाढ़े वस्त्र स्वेत पिछवाई चितराम की । हाथी पै बिराजिके कृष्ण बलदेव होरी खेलत ब्रजभक्तन के साथ पधारें । यह युद्ध शृंगार गो० ति० श्री गोवर्धनलालजी ने विशेष में प्रारम्भ कियो । राजस्थान में प्रभु पधारे तथा गो० बालक तिलकायतन में नवल कृष्ण कन्हैया के रूप में दामोदर लाल जी की कुमारावस्था में फाग की सवारी आरम्भ भई । गुसाईंजी श्री

करिके बिराज । ग्रहण [illegible]
अन्य घरन में माहात्म्य के, रास के, एवं मानलीला के तथा और भी पद गाये जाय ।

प्र०—ग्रहण लगे जब तक भोग आतो रहे ताको कहा आशय है ?

उ०—छोटे बालक कूं माता स्तनपान कराती रहे बैठाय राखे । बच्चा मचले नहीं—तासों । वाय कजरादि न करें । स्तनन्धय बालक कूं ग्रहण में स्तनपान निषेध है ।

प्र०—ग्रहण में मंगला को शृंगार ही क्यों बन्यो रहें ?

उ०—मंगला कामना सूं मंगलभाव बन्यो रहे—या कारण मंगला को शृंगार होय "चमकि आयौ चन्द सो मुख जब कुंजन सों निकस्यो" या भाव सूं मंगल को शृंगार होय ।

मान के पद (रागन के नाम संकेत सहित)

पुष्टि मार्ग में सर्वत्र रागमाला श्रावण में तथा और समय मेंहूं गा[illegible] जाय । नन्ददास जी ने रागरागिनी रूपमें श्री स्वामिनीजी की मानलीला को वर्ण[illegible] कियो है :—

ये मन[1] मान मेरो कह्यो काहे को रूसानी प्यारी स्याम सों
सुधि क्यों न चितवैरी मो तन।
जे जै[2] हुति सोंती तेरी तिनहू की जीत होत सुघराई[3]
क्यों न करत बडहंसि[4] तेरी तूं कर विचार नायका[5] क्योंन होत तूं नट[6] ।
जिन आडन[7] पट दीजेरी मेरी आली का,[8] फीके वचन ।
सुनि ललित[9] कहे रस लैये जू कैसे करि भइये इन को मन ॥
अरी धन[10] ह्वैजु आसावरी[11] रहिये तेरे उन आगे कैसे दिन भरौ,[12] री ।
कहत नन्द दास देसाख[13] कहत वचन सुनि ।
कान्हर[14] सों आय पांयन परिकर आभरन ।
उठि अंकमिल मालब[15]नठनि।

---

[1] इमन, [2] जैजैवन्ती, [3] सुघराई, [4] वडहंस, [5] नायका
[6] नट, [7] अडाना, [8] काफी, [9] ललित, [10] धनाश्री, [11] आसा[illegible]
[12] भैंरों, [13] देशाख, [14] कान्हरा, [15] मालव

गोस्वामी श्रीद्वारकेशजी ने या प्रकार नायिका को वर्णन कियौ । जो छः छः रागन में अवशिष्ट की पूर्ति करी ।

येमन मानभेरो कह्यो काहे को रिसानी प्यारी ।
प्रथम भेरीगुनजन जाइये याहीते सुघराई होत ।
मालकोष की तानन ले ले राजत रूप विहाग ।
द्वारकेश प्रभु वसन्त खिलावत याहीतें बढत सुहाग ॥
अटपटी चालु लट पटे बन्दर्स विष्णुरी अलक अंग अंग प्रफुलितमेन ।
गोविन्द प्रभु की लखिन परत तबते मेरे जिय अति सुख चैन ?
या प्रकार स्वामिनी जी को वर्णन राग माला में कियो ।

मुखपृष्ठ—चित्र का—परिचय (भावना सहित)—

१—गिरिराज कन्दरा में स्थित श्री निकुञ्ज नायक गोवर्धननाथजी (श्रृंगार—तिल० गोवर्धनलाल जी महाराज के गादी उत्सव को)
"गोवर्धनगिरि सघन कन्दरा रैन निवास कियौ पिय प्यारी"

२—वाम भाग में श्री स्वामिनीजी—श्री हस्त में पंखा, चंपई रंग को गौर श्री अंग ।

निकट में कलिमल तारिणी महारानी यमुना—"श्याम संग श्याम सी ह्वै रही जमुना ।" वैष्णवन के मन को प्रतीक कमल श्री हस्त में—"ब्रह्म संबंध होय जीव को तबहीं वाम भुजा फरिकै ।"

४—जगद् गुरु श्री वल्लभ पवित्रा स्वरूप माला श्री हस्त में भक्तन कूं मानो प्रभु कूँ समर्पित रहे हैं । मधुराष्टक की रचना याही समय की है ।

५—पुष्टि शंख सूँ जगायवे वारे श्रीहस्त में शंख लिये श्री हरिराय महाप्रभु ।

६—दक्षिण भाग में चंद्रावली स्वेत चन्द्रकांति शोभावारी । श्री हस्त में गुलाब-दानी को सौरभ पात्र है । गो० विट्ठलेश को भाव स्वरूप ।

६—पृष्ठभाग में रक्ताभ श्री ललिताजी, श्रीहस्त में बण्टा है । सतत सेवा संलग्न । दामोदरलाल हरसानी (दमला) को भावस्वरूप । बण्टा में ताँबूल वीटिका ।

---

१ इमन, २ भैरव, ३ सुघराई, ४ मालकोष, ५ विहाग, ६ बसन्त